भारत एवं राजस्थान सरकार द्वारा विज्ञापनों के लिए मान्यता प्राप्त

आरएनआई पंजीयन RAJHIN/2016/72902

डाक पंजीयन RJ/ UD/ 29-150/ 2023-2025

शब्द रंजन

संस्थापक एवं संरक्षक डॉ. महेन्द्र भानावत

विचार एवं जनसंवाद का पाक्षिक

वर्ष 8 | अंक 14 | उदयपुर मंगलवार 01 अगस्त 2023 | पेज 8 | मूल्य 5 रू.

सुप्रीम कोर्ट द्वारा राजस्थानी भाषा को संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल करने की मांग निरस्त

- पानाचन्द जैन -

संविधान की आठवीं अनुसूची अनुच्छेद 344 (1) और अनुच्छेद 351 से संबंध तथा विषय भाषाओं को कहा है, अनुच्छेद 344(1) के अनुसार आठवीं अनुसूची संविधान का ही एक भाग है। वर्तमान में आठवीं अनुसूची में 22 भाषायें हैं। इनमें हिन्दी, गुजराती, आसामी, मराठी, बंगाली, कश्मीरी, कन्नड, पंजाबी, मलयालम, मनीपुरी, बागड़ी, मैथिली, नेपाली, उड़िया, सांथली, सिन्धी, तामिल, तेलगू व उर्दू हैं।

संविधान संशोधन की प्रक्रिया से भाषा को जोड़ा व हटाया जा सकता है। ये सभी प्रान्तीय भाषायें हैं। हिन्दी, हिन्दी राज्यों की अर्थात् राजस्थान, मध्यप्रदेश, बिहार, उत्तरप्रदेश, दिल्ली, हरियाणा प्रदेश की भाषायें हैं। संविधान सभा ने 14 सितम्बर, 1949 को राज्य भाषा के रूप में हिन्दी को स्वीकृति दी, अर्थात् हिन्दी को राष्ट्रभाषा घोषित किया गया। प्रत्येक राज्य में राज्य की भाषा घोषित की गई वह भी कानून बना कर। जैसे राजस्थान में हिन्दी को राजभाषा अधिनियम द्वारा राजभाषा का दर्जा दिया गया। संविधान में राष्ट्र शब्द का उल्लेख नहीं है, अत: राजभाषा को ही राष्ट्र भाषा कहा जा रहा है।

संविधान के अनुसार 15 वर्ष बाद हिन्दी को मुख्य राजभाषा (राष्ट्र भाषा) माना गया। संविधान के अनुच्छेद 120 में संसद की भाषा हिन्दी मानी गई प्रत्येक राज्य की अपनी-अपनी राज भाषा है। इस प्रकार बोलियों को भाषा का दर्जा नहीं दिया जा सकता। राजस्थानी नाम की कोई भाषा नहीं है और न कोई बोली है, जिस भूमि को हम राजस्थान नाम से पुकारते हैं वह पूर्व में राजपूताना कहा जाता था। राजस्थानी कोई भाषा ही नहीं थी। राजस्थान शब्द का प्रयोग वृहत राजस्थान से जोड़ा जा सकता है।

कुछ लोग जो राजस्थानी का राग अलाप कर रहे हैं वे राजस्थानी अर्थात् मारवाड़ी, ब्रज, हाड़ौती, ढूंढ़ाड़ी, मेवाड़ी, मेवाती, डिंगल, मालानी, शेखावाटी, बागड़ी आदि को ही राजस्थानी कह रहे हैं। इन्हें आठवीं अनुसूची में शामिल करने की बात करते हैं। ये सब बोलियां हैं जो 20 कोस पर बदलती रहती हैं।

बोलियों को भाषा का दर्जा नहीं दिया जा सकता। राजस्थानी नाम की कोई भाषा नहीं है और न कोई बोली है। जिस भूमि को हम राजस्थान नाम से पुकारते हैं वह पूर्व में राजपूताना कहा जाता था। राजस्थानी कोई भाषा ही नहीं थी। जो राजस्थानी का राग अलाप कर रहे हैं वे राजस्थानी अर्थात् मारवाड़ी, ब्रज, हाड़ौती, ढूंढ़ाड़ी, मेवाड़ी, मेवाती, डिंगल, मालानी, शेखावाटी, बागड़ी आदि को ही राजस्थानी कह रहे हैं। ये सब बोलियां हैं जो 20 कोस पर बदलती रहती हैं। राजस्थानी की वकालत करने वाले यह न भूलें कि 26.01.1950 से पहले हिन्दी राजस्थान में उच्च न्यायालय की भाषा थी।

राजभाषा आयोग के गठन व उसके कार्य के कारण हिन्दी शब्दकोष में बढ़ोत्तरी हुई है प्रदेशी भाषाओं के प्रचलित शब्द हिन्दी में शामिल किये गये हैं। हिन्दी भाषा समृद्ध भाषा है। शीघ्र ही यूएनओ की भाषा हिन्दी होने जा रही है। भारत के बाद हिन्दी 100 से अधिक यूनिवर्सिटीज में पढ़ाई जाती है।

राजस्थान हिन्दी भाषी राज है। यहां राजपूताने के सभी राज्यों में हिन्दी पढ़ाई जाती थी। राजस्थानी की वकालत करने वाले यह न भूलें कि 26.01.1950 से पहले हिन्दी राजस्थान में उच्च न्यायालय की भाषा थी।

आपको शायद आश्चर्य होगा कि अंग्रेजी भारत में बोली जाने वाली भाषा नहीं है। यह दूसरे देश की मातृ भाषा है। भारत में प्रयोग में आने वाली भाषाओं में अर्थात आठवीं अनुसूची में अंग्रेजी का कोई उल्लेख नहीं है। आठवीं अनुसूची में अंग्रेजी को कोई स्थान नहीं दिया गया। वह तो इंग्लेण्ड की मातृभाषा है।

संविधान में जो व्यवस्था दी है उसके अनुसार प्रत्येक राज्य की अपनी मातृभाषा है और प्रत्येक राज्य की अपनी राजभाषा को समृद्ध करने का अधिकार है । चूंकि हिन्दी भारत के कोने कोने में बोली जाती है अत: वह देश की सबसे अधिक हिन्दी बोलने के कारण राजभाषा है, राष्ट्र भाषा है, सम्पर्क भाषा है। अनुच्छेद 120 व 210 को समझें तो हिन्दी की स्थिति स्पष्ट हो जायेगी।

राजस्थान हिन्दी भाषी राज्य है। यहां सम्पर्क भाषा हिन्दी है, फिर हिन्दी को हटाकर राजस्थानी (मारवाड़ी) लाने की बात का कोई औचित्य नहीं है। हिन्दी कई देशों में बोली जाती है किन्तु राजस्थानी मातृभाषा वास्ते का नारा देकर नई बोलियों को आठवीं अनुसूची में शामिल करने का आन्दोलन यहां चलाया गया है।

सुप्रीम कोर्ट के दिनांक 27.07.2023 निर्णय ने इस पर विराम लगा दिया है। इस आन्दोलन ने राजस्थानी को यथा ब्रज, मेवाड़ी, मारवाड़ी, बागड़ी, ढूंढ़ाढ़ी, हाड़ौती आदि को संविधान की आठवीं सूची में शामिल कराने का यह आन्दोलन समाप्त कर दिया।

वस्तुत: ये देश में अथवा राज्य में बोलने वाली भाषायें नहीं हैं, किन्तु राजस्थान के कुछ जिलों में बोली जाने वाली बोलियां हैं। राजस्थान का कोई विधायक यह नहीं कह सकता कि उसे हिन्दी नहीं आती।

ऐसी स्थिति में इन बोलियों में लिये गये समाचारों को गजट में प्रकाशित करना होगा। यह सम्भव नहीं है। हिन्दी करोड़ों की जनभाषा है। इसे राष्ट्रपिता ने राष्ट्रभाषा की संज्ञा दी थी। बोलियां हमारे लोकजीवन की आधार हैं और भाषा जड़ें हैं। इन्हीं बोलियों से जीवन रस ग्रहण करता है।

(लेखक राजस्थान हाईकोर्ट के पूर्व न्यायाधीश हैं।)

- दैनिक राष्ट्रदूत 28 जुलाई 2023 से साभार

बेट द्वारका : मीरांबाई का अंतिम प्रवास

डॉ. श्रीकृष्ण 'जुगनू'

बिरज बिसरियो, मुरधर भूली, भमियो सोरठ लाट।
उंठी आवन जानि के बैठी बैठा पाट।।

मीरांबाई ने गुजरात को पांवों के बल पौर - गोर लिया। जूनागढ़ को कई दिनों जोया। वह बुआ का ससुराल था। सोरठ के सुनहरे संबंधों को संवार दिया। वन्थली, भुज, पाटण और सियाणी लिंबड़ी में मिलनी की। सियाणी में जब चारभुजा मंदिर की प्रतिष्ठा हुई, वे वहीं थीं। जहां कहीं जाना होता, मीरांबाई के आने की खबर कानों कान लग जाती थी।

वे ब्रज से सीधे सोरठ पहुंची। वही रास्ता था जो तब लोकप्रिय था और बोलावणी सहित लोग आते जाते थे। मीरांबाई अपने कुछ सेवकों के साथ थी और राजरानी का इस तरह आना सबको चकित करता था। हर कोई नतशिर हो रहता। वे गिरधर गोपाल की छाया में है और उसी को देखती है जिसमें गोपाल का अंश हो, ऐसी बातें हर कहीं चलती थीं। उस काल में सत के अलावा असत और इन धारणाओं के तात्विक संतों की बातें ज्यादा होती थी और महाराष्ट्र के बाद गुजरात ऐसी बातों का केंद्र था।

बचपन में मीरांबाई को जोगी भी कम नहीं मिले। उन्हें बेट द्वारका जाना था। इसका कारण था। वहीं से दो पीढ़ी पहले, महाराणा मोकल की महारानी रणछोड़राय की मूर्ति मेवाड़ लाई थी और पूजा के लिए गुगली परिवार को दी। चंदेरिया में मन्दिर बनाकर स्थापित किया था।

बेट द्वारका ऐसे साधकों के लिए भी प्रसिद्ध था जो परकाया प्रवेश करते थे। जब महाराणा मोकल सपत्नी वहां पहुंचे, तो एक साधक शिष्य ने अपने सिद्ध गुरु से निवेदन कर दिया था कि वह राजसुख देखना चाहता है। गुरु की सहमति पर उसने देह को त्याग दिया। वह साधक महाराणा कुम्भा के रूप में मेवाड़ का राज्याधिकारी हुआ।

मीरांबाई साधों की संगत के बाद ऐसे सिद्धों के कांटे बैठने-देखने का मन लिए थी। उस समुदाय में भी मेवाड़ी रानी संत की चर्चा थी। उनके साथ साथ चलते मेघमाला की चर्चा भी थी। वह चार सेवकों के साथ वहां भी पहुंची। बाला की स्मृतियां ही थीं। वहीं उनके मन को थिरता मिली। स्थितप्रज्ञता। सेवकों को विश्वास था कि बेट द्वारका के बाद बाईजी मेवाड़ का मन बना लेंगी लेकिन वे राजी नहीं थीं। इस बीच मेवाड़ से ऊंटी बहुत सख्त मिजाज़ होकर आए। वे बाईजी की वापसी सुनिश्चित करने का माचातोड़ संकल्प कर चुके थे। मेवाड़ में उन दिनों जो कुछ चल रहा था, उसकी ख़बर आगरा से लेकर गुजरात तक थी। मीरांबाई का पूरी तरह मोहभंग हो चुका था और वे सांवरे की संकड़ी गली में ही बढ़ चली थी। जरा सी भी चूक हो जाए तो ऊंटी उठा के जाते। बाईजी ने जान लिया था कि बेट द्वारका ही गिरधर गोपाल से भेंट का द्वार है। काशी करवत और शंखोद्धार निमज्जन का केंद्र! पहले गागरोन नरेश संत पीपाजी ने वहीं कूद कर कृष्ण से चार छापें पाईं। द्वारका आने वाले छापें लगवाकर वैष्णव होते थे।

मीरांबाई सत्यभामाजी के जिस मन्दिर में ठहरी थीं। पाट और पाट के आगे प्रणत पात। वहां नारी मन की विनती गायी जाती थी। इकतारा बजता था। रणंकार लगती थी। आरती से अधिक महत्त्व करताल संग भजनों का था। भाव का वेग जब उमड़ता तो बाईजी खुद को नहीं रोक पाती और लहरा ले लेती लेकिन, वे काया से परे ज्यादा रहने लगी थी - गगन मण्डल में पीव हमारा सोवन किस विध होय!

बाईजी भी भजन में लीन रहने लगीं और ऐसी स्थिति में ही जिस संध्या को उस मन्दिर से निकली, उसका सवेरा नहीं हुआ...। वे गई कहां! किसी ने तीर देखा, किसी ने चीर... बातें बहुत हुईं! मूल प्रसंग ही नहीं, वह मन्दिर तक अंधेरे में खो गया! जैसी कि भारत की परम्परा है, किसी भी चरित्र, कृति, प्रस्तुति के तीनों मंगल होने चाहिए - आद्य मंगल, मध्य मंगल और अंत मंगल। सागर प्रसंग ईश्वरीय लीनता कहा गया! किसी ने कुछ नहीं विचारा!

बहुत बाद में, अमरकोट के सोढ़ा बैरीशाल की ठकुरानी ने उस मन्दिर की सुध ली! अमरकोट से यहां आने के दो मार्ग थे, कच्छ होकर या मरुस्थल होकर। कैसे आईं, पता नहीं लेकिन तब तक यह मन्दिर सत्यभामाजी के साथ मीरांबाई के बिराजने के कारण सिंध तक जाना जाता था। अन्य स्थान से कोई पहुंचा हो, इसकी जानकारी नहीं।

वहां किंवाड़ लगवाकर धातु पट्टी पर लिखवाया। ठाकुरानी का इसमें नाम नहीं, लेकिन अमर नाम होने का भाव दर्शाया गया है। सच तो यह है कि उस काल में महिला की अपनी पहचान थी ही कहां! पट्टी पर लिखा है- ऊमरकोट - सोढ़ा श्री 105 श्री बेरीसालजी री ठकरानी, बेटी मधुससिंहजी की, यात्रा आया, जदी श्रीसत्यभामाजी रा, श्रीमीरांबाईरा कीमाड़ की सेवा मेधानी वडीया हस्तक करी अमर नाम कीया, संवत् 1987 ना.

पोथीखाना
गुल्लक में जीवनियां

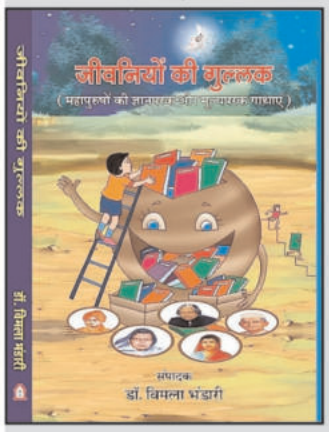

आज के दौर में जब बच्चे हमारी अमूल्य संस्कृति, परम्पराओं, धरोहरों एवं महापुरुषों के बलिदान एवं उनके सिखाए हुए नैतिक मूल्यों को भूलते जा रहे हैं ऐसे में उदयपुर की साहित्यिक सलिला संस्थान द्वारा आयोजित प्रतियोगिता में देश भर के लेखकों से महापुरुषों की जीवनियां आमंत्रित की गई थीं। 'जीवनियों की गुल्लक' नामक इस पुस्तक में उन्हीं प्रविष्टियों में से चयनित 35 श्रेष्ठ जीवनियों को संकलित किया गया है। पुस्तक में बच्चे संत कबीर ,संत रविदास ,महर्षि वाल्मीकि, मोरक्को का यात्री इब्नबतूता, पक्षी प्रेमी सलीम अली, महान गणितज्ञ श्रीनिवास रामानुजन, मिसाइल मैन एपीजे अब्दुल कलाम, शहीद रामप्रसाद बिस्मिल, कार्टूनिस्ट सुधीर तेलंग, भारत की प्रथम महिला शिक्षक सावित्रीबाई फुले, प्रथम महिला चिकित्सक रुकमाबाई, गुदड़ी के लाल लालबहादुर शास्त्री, गोपालकृष्ण गोखले, स्वामी विवेकानंद, प्रथम महिला सैनिक जासूस नीरा आर्य सहित कई महापुरुषों की जीवनियां पढ़ सकते हैं। पुस्तक के हर अध्याय में सम्बन्धित महापुरुष के चित्र तो हैं ही ज्यादातर जीवनियों में उनके जीवन के कुछ अहम प्रेरक प्रसंग भी सम्मिलित किए गए हैं । पुस्तक से बच्चों को महापुरुषों की सोच, उनके संघर्ष की गाथा, काम के तरीके, उनके सिखाए नैतिक मूल्य व उच्च विचार, युक्ति से कम लेने की कला आदि जानने में मदद मिलेगी। जिससे उन्हें काफी कुछ सीखने को मिलेगा।

प्रख्यात बालसाहित्यकार डॉ. विमला भण्डारी द्वारा सम्पादित एवं डॉ. सतीश कुमार तथा प्रख्यात बाल साहित्यकार प्रकाश तातेड़ के सह सम्पादन में यह पुस्तक साहित्यागार, जयपुर से प्रकाशित 300 रूपये मूल्य की है।

- शिखरचंद जैन

कर्मशील व्यक्तित्व का करिश्माई कमाल

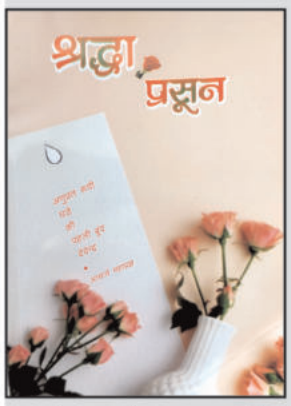

राजसमंद के मामूली इन्सान देवेन्द्रकुमार कर्णावट ने अपने विवेकशील पुरुषार्थ से पूरे देश में अणुव्रत आन्दोलन के समर्पित साधक के रूप में अपनी अमिट पहचान बनाई। उनके निधन पर राजनेताओं, समाजसेवियों, धर्मगुरुओं, साधु-साध्वियों, लेखकों तथा उनसे परिचित स्नेहीजनों ने जो श्रद्धाभिव्यक्ति दी उसका संकलन 'श्रद्धा प्रसून' नाम से विद्या त्रिपाठी तथा विजयकिशोर त्रिपाठी ने सम्पादित किया है। इसका प्रकाशन देवेन्द्रकुमार कर्णावट के जन्म शताब्दी वर्ष 1924-2024 के उपलक्ष्य में गांधी सेवा सदन राजसमंद-313324 ने किया है।

'अणुव्रती का महारथी' शीर्षक से आचार्य महाप्रज्ञ ने लिखा- ''मैंने उसके (देवेन्द्र के) जीवन को देखा। पचास-साठ वर्ष का हो गया तो भी शिशु जैसा निश्छल और सरल था। काम करवाना होता तो कभी मेरा और कभी गुरुदेव का (आचार्य तुलसी) पैर पकड़ लेता, एक बच्चे की तरह। ऐसा शैशव, शिशुपन या भोलापन जो कभी-कभी जिद भी पकड़ लेता कि खड्डे के भीतर से चलो। महात्मा ईशु ने कहा था कि अगर स्वर्ग में जाने का किसी को अधिकार है तो बच्चे को है या बच्चे जैसे व्यक्ति को है। इतना शैशव, भोलापन था देवेन्द्र में। अणुव्रत के कार्यकर्त्ताओं की प्रथम पंक्ति में पहला आसन देवेन्द्र का था। वह अणुव्रत रूपी घड़े की पहली बूंद था।''

आर्ट पेपर पर बेहतरीन छपाई लिए 68 पृष्ठों में कर्णावटजी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर श्रद्धा सुमन सुगंधाये गये हैं जबकि अन्त के 28 पृष्ठ बिम्ब-प्रतिबिम्ब के रूप में विविध चित्रों एवं पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित निधन-समाचारों से युक्त है।

- डॉ. तुक्तक भानावत

एलजी इलेक्ट्रॉनिक्स इंडिया और आईटीसी फूड्स में साझेदारी

उदयपुर (ह. सं.)। एलजी इलेक्ट्रॉनिक्स ने आईटीसी फूड्स के साथ रणनीतिक साझेदारी की घोषणा की है। साझेदारी के हिस्से के रूप में, स्कैन टू कुक सुविधा के साथ 2 नए माइक्रोवेव ओवन की घोषणा की गई है। यह घरेलू उपकरणों और आईटीसी फूड्स उत्कृष्टता में एलजी की विशेषज्ञता को एक साथ लाएगा, जिससे एक सहज और सहज खाना पकाने का माहौल तैयार होगा, जिससे उपभोक्ताओं का जीवन आसान हो जाएगा। वर्तमान में माइक्रोवेव के 2 मॉडल पेश किए गए हैं और त्योहारी सीजन तक 7 और मॉडल पेश किए जाएंगे।

एलजी इलेक्ट्रॉनिक्स में होम अप्लायंसेज और एयर कंडीशनर्स के निदेशक ह्योंग सबजी ने कहा कि एलजी इलेक्ट्रॉनिक्स भारत में स्मार्ट माइक्रोवेव्स के साथ पकाने को क्रांतिकारी बनाने के लिए आईटीसी फूड्स के साथ हाथ मिलाने के लिए उत्साहित है। एलजी का फोकस पकाने को स्मार्ट बनाने पर है और एलजी और आईटीसी के सहयोगी प्रयासों से, हम अपने ग्राहकों के रसोईघर अनुभव को बेहतर बनाने का निश्चित हैं। हम विश्वास करते हैं कि यह साझेदारी उपभोक्ताओं के जीवन को कभी पहले से भी आसान बनाएगी, जिससे उन्हें आसानी से गोरमेट-गुणवत्ता के भोजन बनाने की सुविधा होगी। हमारी स्मार्ट माइक्रोवेव रेंज जिसमें स्कैन टू कुक फीचर है, जीवन को सरल बनाएगी। यह रेंज टिंक क्यू ऐप के साथ संगठित 401 ऑटो कुक मेनू, प्रीसेट रेसिपीज के साथ लैस है। हमारे पास 100.शेफ की टीम है जो ग्राहकों को लाइव पकाने के डेमो प्रदान करते हैं ताकि अधिक से अधिक उपभोक्ता इस तकनीक का उपयोग कर सकें। आईटीसी लि. के वाइस प्रेसिडेंट आशु फाकी ने कहा कि आजकल उपभोक्ता सरल, स्वादिष्ट और स्वस्थ भोजन की तलाश करते हैं जो भागदौड़ भरे समय के कारण न्यूनतम समय में तैयार करने में मदद करें।

पत्रों के आलोक में (10)

डॉ. जे. के. ओझा, कानोड़ के पत्र

भीलवाड़ा जिले के माण्डल गांव निवासी डॉ. जे. के. ओझा (जमनेश कुमार ओझा) मेरे गांव कानोड़ के पं. उदय जैन महाविद्यालय में इतिहास के व्याख्याता थे। जब भी कानोड़ जाता, पोस्ट ऑफिस के पास उनके निवास पर मिलता। एकबार मैं उनके साथ होली पर निकाले जाने वाले स्वांग पर लिखने माण्डल भी गया।

वहां का अद्‌भुत स्वांग देख मैंने धर्मयुग में 'सींगोंवाले शेर' नाम से लेख लिखा। इसमें चार व्यक्ति सींग लगाकर पूरे शरीर पर सिंह जैसी चकतावली से साक्षात् सिंह की हमशक्ल लिए खासा रंजन देते हैं। बादशाह शाहजहां जब उदयपुर से लौट रहा था तब उसके मनोरंजनार्थ इसका प्रदर्शन शुरू हुआ जो अब भी प्रचलन में है।

एकबार मैं कानोड़ मिलने उनके निवास पर पहुंचा तो मुख्य फाटक पर कुत्ते से सावधान वाली तख्ती लगी थी और कुत्ता भों-भों करता फाटक तक लपका। यह देख मैं उनसे बिना मिले ही लौट आया और उन्हें लिखा, मैं आपसे मिलने आया और कुत्ता मिला सो लौट आया। भविष्य में भी मैं आपकी बजाय कुत्ते से नहीं मिलना चाहूंगा।

फिर तो उन्होंने वह मकान ही नहीं, सेवानिवृत्ति के बाद कानोड़ ही छोड़ दिया। उदयपुर में उनसे हाऊ-हेलो होती रहती है। उनके लिखे 1994 के दो तथा 1996 के लिखे चार पत्र मेरे पास सुरक्षित हैं।

21 अप्रेल 1996 के पत्र में लिखा- मैं द इन्स्टीट्यूट ऑफ मेवाड़ हिस्टोरिकल स्टडीज नाम से एक एकेडेमिक सेल बनाना चाहता हूं जिसके चेयरमेन आप होंगे। डिप्टी चेयरमेन एन. के. धींग एवं ऑनरेरी डायरेक्टर का कार्य मैं करूंगा। उद्‌देश्य कानोड़ दिवस तथा वर्ष में तीन-चार अकादमिक गतिविधियां, विद्वानों के भाषण आदि। स्वीकृति भेजें। परिवर्तन करना चाहें तो बतायें। कानोड़ पर कार्य करने वालों को सम्मानित भी करेंगे।

18 अप्रेल के पत्र में लिखा- आज की राजस्थान पत्रिका में आपके साक्षात्कार को पढ़ा। राजस्थान संगीत नाटक अकादमी द्वारा 25000/- की राशि से सम्मानित होने पर हार्दिक बधाई एवं मंगल कामना। मुझे तो आपकी हर बात में गम्भीरता एवं गहनता के दर्शन होते हैं। मीरांबाई वाली पुस्तक के एक-एक अक्षर में आपके दर्द एवं तत्कालीन नायक पात्र के दर्द की सामंजस्यता है।

07 अगस्त 1996 के पत्रानुसार- कानोड़ दिवस के सन्दर्भ में नवयुवक मण्डल की बैठक में आपके सुझावानुसार सांस्कृतिक कानोड़ विषय स्वीकारा है। मैंने 12 नवम्बर 1991 को देवा बा पटेल का साक्षात्कार लिया तब वे 93 वर्ष के थे। राजपुरा ठिकाना कानोड़ का गांव की पटेलाई परम्परा के वे पटेल थे। पांच मोतबीर आदमियों से पूछकर ठिकाना रावल पटेल को नियुक्त करता। कुल्मी जाति का यह पटेल ठिकाने का काम ठीक से नहीं करने पर पटेलाई जब्त कर ली जाती।

पटेल को ठिकाने की ओर से जागीरी जमीन मिलती जिस पर किसी प्रकार की लागत, हांसल नहीं लिया जाता। प्रथम महारावत सारंगदेव द्वितीय था। उसके समय राजपुरा व इस वंश का प्रथम पटेल हरजी, दूसरा भेरू, तीसरा खेमा, चौथा नारायण व पांचवां देवाजी (वर्तमान) था। यह परम्परा 1711 ई. से शुरू हुई।

देवाजी ने बताया कि कानोड़ महारावत यदि कभी पटेलों के यहां मेहमान हुए तो राजपुरा पटेल के यहीं हुए। पटेल गांव की व्यवस्था बनाये रखने में मददगार होता। कोई भी सूचना देनी होती तो रेड़ पटकाई जाती। आशा है, आपका इससे काम चल जाएगा।

25 सितम्बर 1996 के पत्र में लिखा, आप द्वारा चाही गई सूचनानुसार 1991 की जनगणनानुसार कानोड़ नगरपालिका की जनसंख्या 13,303 थी।

- म. भा.

अजब-गजब

मट्‌ठा साहब का फरमान

गुरुकुल छोटीसादड़ी में पढ़ने के दौरान सन् 1953 में ही मैंने बाल बढ़ाने शुरू कर दिये थे पर वहां के नियमानुसार यह ठीक नहीं था। एकदिन गृहपति नानालाल मट्‌ठा ने लम्बी घण्टी बजाते सबको इकट्‌ठा कर कहा- 'या तो आपके बाल रहेंगे या नानालाल ही।' यह सुन जिनके बाल बढ़े हुए थे उनमें खलबली मच गई।

दूसरे दिन रविवार था सो नाई-धोबी आये। तीन सौ छात्रों में बीसेक के साथ मैं भी बाल कटाने की कतार में लग गया। कुछ ने तो सारे बाल ही कटवाकर अपना सिर घोटमोट करवा लिया। मैंने भी बेमन से छोटी अंगुली के टेप्पे आधे से भी छोटे बाल रख शेष धराशाही करवा दिये। पहलीबार बड़ी अटपटी बेचैनी का सामना करना पड़ा। दरअसल हाईट छोटी होने के कारण बाल ही तो एकमात्र मेरी पहचान थे।

ऐसे छोटे बाल कि टोपी रखो तो फिट नहीं हो। ठीक से निगाह नीची करो तो नीचे आ गिरे पर मट्‌ठा साहब को तनिक भी नाराज नहीं करना था। साल भर बाद हाईस्कूल पास कर वहां से विदा हुआ। फिर मैंने पुनः बाल बढ़ाने शुरू कर दिये जो पिता-माता तथा भाई-भाभी के निधन होने पर भी नहीं कटवाये।

कोई पन्द्रह वर्ष बाद भाई साहब ने जैनाचार्य के एक विशाल समारोह में मट्‌ठा साहब को आमंत्रित कर समाज की ओर से उनका भव्य अभिनन्दन कर 25 हजार की थैली भेंट कराई। उस दौरान मट्‌ठा साहब को मैंने भी अपनी श्रद्धाभिव्यक्ति अर्पित करते गुरुकुल में बालों सम्बन्धी उस घटना की याद दिलाई और कहा, 'मेरी पहचान तब भी और आज भी बिचारे ये बाल ही हैं। तब थोड़े मर्यादित थे। आज अधिक सघन घने और बड़े हैं।' मट्‌ठा साहब तनिक मुस्कराये जरूर पर कुछ नहीं बोले।

अलार्म बनाम अलाम

घटना सन् 1965 की है। सुबह उठने में देरी हो गई। देखा तो घड़ी का अलार्म ही नहीं बजा। कमरे के बाहर आकर पत्नी से इसकी चर्चा कर रहा था तो पास के कमरे से लाभचन्द बासा काये-काये बाहर आये। बोले, 'बापू मैंने आपका क्या बिगाड़ा जो सुबै-ही-सुबै मुझे अलाम कह रहे हो।'

बासा की बात सुन मैं सुबै-ही-सुबै कुछ नहीं बोला। पत्नी भी सकपका गई कि आज बासा को क्या हो गया जो ऐसी बात कही। चाय पीते ही हमारा दिमाग यही सोचता रहा कि ऐसी कोई बात नहीं हुई पर बासा ने भी कुछ कहा तो सोच समझ कर ही कहा होगा पर हमें कोई समाधान नहीं मिल रहा था।

भोजन कर मैं ऑफिस जाने को तैयार हुआ तभी पत्नी बोली, 'घड़ी लेते जाओ, अलार्म जो ठीक करानी है।' पत्नी के यह कहते ही मुझे समाधान मिल गया। दरअसल पत्नी का अलार्म शब्द सुनते ही मैं उसे अलाम समझ बैठा। मैं पत्नी को लेकर बासा के पास गया और उनकी शंका का समाधान करते क्षमा मांगी। बासा बोले, 'क्षमा तो मुझे मांगनी चाहिए कि गलतफहमी का शिकार मैं हुआ।'

मूंफली की कुतर-कुतर

बीकानेर के सेठिया जैन हॉस्टल के कमरे में होमवर्क करने के बाद कोई ग्यारह बजे सो गये। कोई घण्टे भर बाद चूहे की कुतर-कुतर जैसी आवाज आई। चार में से हम तीन साथी परेशान हो गये। थोड़ी आहट करते ही कुतर-कुतर बन्द और फिर थोड़ी देर बाद शुरू।

ऐसा करते रात की डेढ़ बज गई। दीया लेकर हम इधर-उधर चूहा ढूंढ़ने लगे पर बहुत खोजबीन करने पर भी निराशा ही हाथ लगी। नतीजतन जैसे-तैसे चुपचाप सोगये। सुबह हम तीनों को कॉलेज नहीं जाना था पर वह चौथा साथी चूंकि दूसरे कॉलेज में पढ़ता था सो चला गया।

तीनों मिलकर रात की घटना याद करते-करते समाधान खोज रहे थे कि अचानक हमारी निगाह कमरे के ऊपर लगी पट्‌टी की टांड पर गई जिस पर लोहे की पेटी रखी हुई थी।

हमने धीरे से उस पेटी को नीचे उतारी और देखा तो वह मूंफलियों से आधी भरी हुई थी। हमें समझने में कोई देरी नहीं लगी कि वह साथी रात के अन्धेरे में रजाई के भीतर मूंफली छिलकर खा रहा था। हम उसे चूहे की कुतर-कुतर समझ गये। ज्योंही हम चूहे को ढूंढ़ने की हरकत करते वह मूंफली खाना बन्द कर देता और शान्त वातावरण पाकर पुनः छिलके उतार खाना शुरू कर देता।

हमारे पर शैतानी चढ़ आई। सोचा क्यों न इन सारी मूंफलियों का ही कायाकल्प कर दिया जाय। यद्यपि हमारा यह सोच ठीक नहीं था पर उसे हमें सबक देना था कि जब सभी साथ रहते हैं तो प्रसाद की तरह ही सही, सबको उसका हिस्सा मिलना चाहिए।

हमने यही किया। दो-तीन घण्टे में हम आराम से पूरी मूंफलियों को छीलते खाते रहे और उसी पेटी में सारे छिलके भरकर उसे बड़े करीने से जहां वह रखी हुई थी, रखदी।

- म. भा.

स्मृतियों के शिखर (169) : डॉ. महेन्द्र भानावत

भौहों से चोपड़े लिखे मावजी ने

राजस्थान का दक्षिणी भाग कभी वाग्वर प्रदेश के नाम से सुचर्चित था जो आज वागड़ के नाम से ही अधिक जाना जाता है। इस प्रदेश में कई संत तपे। इन संतों में अधिकांश अज्ञात ही बने रहे। ऐसे संत आज भी हैं जो ज्ञात होते हुए भी अपनी गूढ़ साधना और तपस्या की दृष्टि से अज्ञात ही बने हुए हैं।

इनमें कुछ तो तीर्थस्थलों में तप रहे हैं। कुछ मगरे-मगरियों में बने प्राचीन गुफास्थलों में साधनारत हैं। धूणियों पर भी कुछ साधु बैठे हुए हैं। कुछ मनुष्य की पहुँच से परे ऐसे स्थानों पर ध्यान मग्न हैं जहाँ किसी की कोई छाया तक उनके लिये बाधा नहीं बन सकती।

ऐसे ही एक दुंदड़ीमल संत हैं जो बसंतपुरी कहे जानेवाले वर्तमान बांसवाड़ा के कड़वायो नामक डूंगर में तपस्वी बने हुए हैं। ये अघोरी हैं। दुंदड़ीमल पूर्व में दुलहसिंह राजपूत थे। पलोठी धारणकर जब ये साधना में मग्न होते हैं तो जुग-जुग तक ध्यान-मग्न ही बने रहते हैं। एक-एक दो-दो जुग की तपस्या तो इनके लिये सामान्य तपस्या है। इस दौरान एकबार इनके एक पांव में चींटियाँ लग गईं जिससे सारा पांव जाता रहा तब इन्होंने उसकी जगह एक मरे हुए ऊँट का पांव लगा दिया।

बरसों तपस्या मग्न रहने से संतों में इतनी शक्ति आ समाती है कि वे धरती पर नहीं चल सकते। धरती को बचा-बचाकर चट्टानों पर पांव देकर चलते हैं तब भी कभी-कभी उनके पांव चट्टान पर अपना निशान छोड़ देते हैं। इससे उनकी ताकत का अनुमान सहज ही लगाया जा सकता है।

संत दुंदड़ीमल अन्न-जल ग्रहण नहीं कर हवाभाखी हैं। जब-तब ये अपनी चाह के अनुसार अपना रूप धारण करने की भी सामर्थ्य रखते हैं। एक जुग एक सौ पच्चीस वर्ष का कहा गया है।

वागड़ क्षेत्र में पांडवों का अज्ञातवास भी बहुत रहा। ऐसे कई स्थान हैं जो उनके निवास और कर्मक्षेत्र बने हुए हैं। कई दंत कथाएँ और जनश्रुतियाँ हैं जो उनके अलौकिक, अजूबे, अनूठे और अद्‌भुत कार्यों की दास्तान कहती हैं।

कई लोकगीत गाथाएँ हैं जो उनके सम्बन्ध में बहुत सारी ऐसी बातें बतलाती हैं जो रहस्यमय और चमत्कारपूर्ण ही कही जा सकती हैं। अन्त में वे हिमालय चले गये अपने पाप धोने के लिये। पापों का प्रायश्चित करने के लिये। आत्मशुद्धि के लिये।

दशमे नारायणजी नु निकलंकी नाम
खेतर साबला पुरि पाटण माम
उतम न्यात माता केशर माँ
पिता दालम ऋषि निकलंकी तात
सवंत सतरा नै चौरासि नु साल
माघ रे मइनी नै अजुवारि पाख
तिथि एकादशि वार सौमवार
शुकर लगन मे अमरत जोग
मकर लगन मै मलियो संजोग
सै डे गुरु हरि ने सतिया सुर
काया कल्प हरि ने मुखडे तंबोल
हनुमंत भाव प्रगटयो नै निज नु धाम
तारे धरयो धणि दशमो अवतार

ये जो हिममानव के रूप में कभी-कभी दिखाई देते हैं; ये ही पांडव हैं। ये ऐसे असाधारण पुरुष बन गये हैं जो अपने रक्त, शरीर और हाड़ में एकमेक हैं। हवा भी इनमें प्रवेश नहीं होती। न इन्हें कुछ खाने की जरूरत रहती है न पीने की ही। इनके साथ कुन्ती और द्रोपदी भी है जो हिममानवी रूप लिये है। ये कभी किसी को नहीं दिखाई दीं। नग्नावस्था में होने के कारण किसी पुरुष की निगाह तक की ये शिकार नहीं होना चाहतीं। वासना से दूर ये सब अपनी पवित्रता के कारण ही हिम सदृश धवल-उज्ज्वल बने हुए हैं।

मावजी अन्तर्यामी संत पुरुष थे जिन्होंने अपने समय में बड़ी जबर्दस्त समाज-क्रांति, धर्म-क्रांति और भक्ति-क्रांति की।

बेणेश्वर मावजी की साधना स्थली रहा। तब वहाँ चारोंओर पानी से भरा सरोवर था और बेण वृक्षों का सघन वन था इसलिए यह स्थान बेणेसर कहलाया। ऐसे निर्जन और एकांत स्थान पर मावजी ने अपने कृष्ण से साक्षात्कार किया। उन्होंने अपने अन्तर की वाणी को बड़े विचित्र रूप में लेखनी दी।

अपनी आँखों की भौहों से जहाँ अति महीन अक्षर लिखे वहाँ अंगुलियों की सहायता से बड़े-बड़े आखर भी लिखे। यही नहीं, अपने हाथ और पांव के अंगूठे से भी लेखन किया और बालों की चोटी को मरोड़ी देकर कई चित्र उकेरे। इसके लिये उन्होंने बारह पोठी कागज काम में लिया। मावजी का यह लिखा कहीं देखने को नहीं मिलता। उनके शिष्यों ने बाद में उस लेखन के आधार पर जो कुछ लिखा उसमें बहुत कुछ उनका अपना मिलाया हुआ है। मावजी का लिखा तो वे बहुत ही कम पढ़-समझ पाये। शिष्यों द्वारा लिखा गया वह लेखन ही मावजी के चोपड़े के नाम से जाना जाता है।

अपने लेखन द्वारा मावजी ने कई ग्रंथों की रचना की। इनकी संख्या सात सौ से ऊपर कही गई है। सर्वाधिक तो उन्होंने भविष्य-कथन ही लिखा जो मावजी की भाखणी (भविष्यवाणी) के नाम से जाना जाता है। इनकी संख्या 71 लाख 66 हजार कही जाती है।

चोपड़ों में जो वाणी संग्रहीत है वह मावजी द्वारा साढ़ा तीन दिन में लिखी गई है। ऐसे कुल पांच चोपड़े हैं। इनमें से चार तो अभी भी उपलब्ध हैं। पांचवा पेशवा के हाथ पड़ा जो अपने साथ ले गया। ये चोपड़े सागर कहलाते हैं।

चार गाँवों के चारों मंदिरों में ये चोपड़े धार्मिक पवित्र ग्रंथों की तरह पूज्य हैं। इनमें से मावजी के जन्म-गाँव साबला में मेघसागर, पूंजपुर में प्रेमसागर, शेषपुर में सामसागर तथा बांसवाड़ा में रत्नासागर है। पांचवा चोपड़ा अननासागर था। मावजी के भक्त इन चोपड़ों के वाचन के लिये मंदिर के मठाधीश को श्रद्धापूर्वक अपने यहाँ आमंत्रित करते हैं। इसे 'पधरावणी' कहते हैं। मावजी को उनके भक्त ईश्वर की तरह निष्कलंकी मानते हैं इसलिये उन्हें निकलिंग भी कहते हैं।

प्रेमसागर नामक चोपड़े में वर्णन आता है कि मावजी ने लसाड़ा नामक गाँव में बैठकर मात्र चार दिन चार रात में पांचों चोपड़ों और ग्यारह गुटकों की रचना कर डाली। इसी चोपड़े के अनुसार गोपियों द्वारा पूछने पर कृष्ण उत्तर देते हैं कि भारत के जम्बूद्वीप के जम्बूखंड में कलियुग के प्रथम चरण में बेणेश्वर का बेण यानी संगम होगा। सोम और माही का आबूदरा यानी घाट होगा। घाट से आधा कोस दूर शम्मल (वर्तमान साबला) नामक गांव में मेरा जन्म होगा। मेरा चार कला का अवतार होगा। आठ कला का रामावतार होगा। बारह कला का कृष्णावतार होगा। चार कला का कल्कि अवतार होगा और 16 कला का निष्कलंक अवतार होगा। यह पूर्ण अवतार होगा।

मावजी महाराज

चोपड़े में मावजी ने जो भविष्यकथन, भाखणी की वह आज सत्य घटित हो रही है। इससे मावजी की भविष्य दृष्टि और अलौकिक आत्मशक्ति का परिचय मिलता है।

कुछ भाखणियां इस प्रकार हैं -

(1) एक थाल मां जीमण जमासे
सभी जातियों के लोग एक थाली में भोजन करेंगे।

(2) नाते परनाते नातरं होसी
अन्तर्जातीय विवाह होंगे।

(3) उत्तम घेरे मध्यम न्यात मध्यम घेरे उत्तम न्यात
उत्तम जाति में निम्न जाति और निम्न जाति में उच्च कुल के विवाह होंगे।

(4) वरणा वरण रे सांसो मटसें
वर्ण-वर्ण (जाति-जाति) का भेद मिटेगा।

(5) पापी रो पलड़ो भारी होसी
पापियों यानी दुर्जनों की बहुलता होगी, अधिक प्रभावी होंगे।

(6) मगरे-मगरे नेसाण होसी, मगरे-मगरे धजा फरुख से
पहाड़-पहाड़ निशान होंगे, ध्वजा फहरेगी
अर्थात् देवी-देवताओं की बहार होगी।

इन भविष्यवाणियों में जो संकेत मिलते हैं वे आज चारों तरफ दृष्टिगोचर हो रहे हैं। धर्म के नाम पर जो पाखंड, अन्याय, आडम्बर, दुराचार और अनैतिकता का बोलबाला दिखाई दे रहा है वह किसी से छिपा हुआ नहीं है। ईश्वर का लोप हो गया है और व्यक्ति स्वयं भगवान बनकर दुष्कर्मी बना हुआ है। इन भविष्यवाणियों में क्षरित होते हुए मानव मूल्यों के साथ-साथ उसके सामाजिक सरोकारों, धार्मिक उन्मादों, आध्यात्मिक ऊहापोहों और जीवन जीने के तौरतरीकों में जो बदलाव आया दिखाई दे रहा है उसका सम्यक् संकेत मिलता है।

मावजी के चोपड़ों की तरह ही बारहमासा काव्य में भी वर्णन मिलता है कि मावजी ने कृष्ण के रूप में अथवा कृष्ण ने मावजी के रूप में अवतार धरा है और गोकुल-मथुरा में जो रास किया था वही रास यहाँ बेणेश्वर में किया है।

महापुरुषों के साथ सदैव यह रहा है कि हम उन्हें श्रद्धेय मानकर अति श्रद्धेय बनाने की अतिरंजना ही अधिक पैदा करते हैं। इससे उनका वास्तविक जीवनवृत्त अनजाना रह जाता है और फिर रहस्यों के, चमत्कारों के घटना-प्रसंग उनके साथ जुड़ते रहते हैं। मावजी भी इससे अछूते नहीं रहे हैं।

यह भी कहा जाता है कि कृष्ण ने जो रासलीला ब्रज में अधूरी छोड़ी, उसे यहाँ बेणेश्वर में पूरी की। मावजी ने इसके प्रदर्शन का अधिकार इधर बसे साद लोगों को दिया जो आज भी बड़े धार्मिक अनुष्ठान के रूप में उसका निर्वहन कर रहे हैं। मावजी के भक्त मनौती की संपूर्ति के रूप में सादों को अपने यहाँ आमंत्रित कर रासलीला के रात्रि जागरण का संस्कार पूरा करते हैं।

यहाँ यह वर्णनीय है कि लीला प्रदर्शन का अधिकार सदा ही ऊँची जातिवालों के जिम्मे रहा। वह लीला चाहे रामलीला हो या रासलीला पर मावजी ने अपने समय में जबर्दस्त क्रांति कर बुनकरों को यह अधिकार दिया और उनसे कृष्णलीला का मंचन करवाया। इसके लिये उन्होंने इनको दीक्षित कर शुद्ध किया। ये ही शुद्ध-पुरुष साद नाम से जाने गये।

वर्तमान गादीपति अच्युतानंदजी

नाथी बेणासरियो मेलो, नाथी धीरी रीजे ए
नाथी खूणावाली कोटी, नाथी धीरी रीजे ए
नाथी मांणा गऊड़ा काड़ो, नाथी धीरी रीजे ए
नाथी हलिया रा हूपेड़ा, नाथी धीरी रीजे ए
नाथी मेले आपी जाहा, नाथी धीरी रीजे ए
नाथी चुड़लो जीवन जाइहे, नाथी धीरी रीजे ए
नाथी भर जोवन में ई है, नाथी धीरी रीजे ए

गीत गाते हुए ये टोले आदिवासी महिलाओं के हैं। इनके पांवों ने रात-रात भर लम्बी सड़क नापी है। डूंगरपुर, बांसवाड़ा, प्रतापगढ़ और उदयपुर के सूदुर गांवों, बस्तियों और टेकरियों से रूनक-झुनक स्वर-ताल के ठेकों में इन्होंने संगीत की स्वरलहरियों से सारे मार्ग को सुवासित किया है।

बेणेश्वर बाबा से दूजा और कोई बाबा नहीं। बेणेश्वर मेले से दूजा और कोई मेला नहीं। एक नहीं सैंकड़ों झुंड-के-झुंड बरसाती बेरियों की तरह उमड़ते-घुमड़ते यहाँ एकत्र हो रहे हैं। भील, मीणे ही क्यों ; और भी कई आदिवासी जातियाँ हैं-डेगेर, तनीमा, हूंडियार, खराड़ी, बुझ, बरगोड़, भसार, भगोरा, ताबोड़, डामोर, कलासुआ, कटारा, दायमा आदि कितने ही नाम हैं। मेले की हूंस में ये नाम नहीं समा रहे हैं।

लोकतीर्थ बेणेश्वर सोम जाखम और माही नदियों के पानी का संगम-स्थल है। डूंगरपुर और बांसवाड़ा की सीमाओं पर अरावली पर्वतमाला के मध्य अवस्थित इस तीर्थ के माहात्म्य का साक्षी स्कंदपुराण है। माही मध्यप्रदेश से आती हुई राजस्थान में मोरन, ऐराव, मादर, चाप और अनास को मिलाती -आत्मसात करती हुई, सोम पर संगम बनाती है। वागड़ की यह गंगा-माही मध्यप्रदेश की ही नहीं, राजस्थान की भी बड़ी नदी है।

संगम से तात्पर्य है बेणेश्वर अर्थात तीनों के कटाव का सुन्दर सुथरा द्वीप। प्राकृतिक सौन्दर्य से परिपूरित बेण वृक्षों की झुरमुट में शांत स्निध दूर-दूर तक हरा-भरा भला किसके मन को नहीं भायेगा ! माघपूर्णिमा पर लगने वाला यहाँ का मेला आदिवासियों का सबसे बड़ा मेला, जाखम, सोम और माही के साथ-साथ आदिवासी संस्कृतियों, रंगीनियों, रासक्रीड़ाओं और नृत्यगीतों की बहारों का भी संगम स्थल है।

बेणेश्वर का मेला डूंगरपुर जिले की आसपुर तहसील के नवातपुरा नामक स्थान पर जुड़ता है। उदयपुर-बांसवाड़ा-डूंगरपुर बस मार्ग पर स्थित साबला गांव से कोई 6 किलोमीटर दूर यह मनोरम स्थल है जो उदयपुर से 123 किलोमीटर, बांसवाड़ा से 53 किलोमीटर तथा डूंगरपुर से 45 किलोमीटर पड़ता है।

सोम तथा जाखम नदी के मध्य में कटारा क्षेत्र है। यहाँ का शिवमंदिर लिंगाकार में प्रतिष्ठित है। 20 सेन्टीमीटर का यह लिंग स्वयं उद्‌भूत हुआ जो स्वयंभू कहलाया। यह लिंग पांच स्थानों पर खंडित है। इसके लिये कथा प्रचलित है-

कहते हैं कटारा के पास ही निवातपुरा नाम का पुराना गांव बसा हुआ है। यहां से प्रतिदिन एक गाय शिवमंदिर जाती और शिवलिंग पर दुग्धाभिषेक कर चली जाती । ग्वाला परेशान हो गया। एक दिन ग्वाला और गाय-धनी उसके पीछे-पीछे चले। गाय शिवमंदिर पहुँची। दुग्धाभिषेक करते हुए उसने अपने मालिक को देख लिया। फलत: वह वहाँ से भागी। भागते समय शिवलिंग उसके खुर के नीचे आ गया इससे वह पांच स्थानों से खंडित हो गया।

संवत् 1510 का बना यह मंदिर आज भी मध्यप्रदेश, राजस्थान और गुजरात की गर्वोक्ति बना हुआ है। इस मंदिर के पास ही त्रिविक्रम विष्णु, लक्ष्मीनारायण और ब्रह्मा के तीन मंदिर बने हुए हैं जो तीन सम्प्रदायों के अस्तित्व को रोशन करते हैं। भगवान विष्णु का मंदिर संवत् 1850 में संत मावजी की पुत्रवधू जानकुँवरी ने बनवाया तथा ब्रह्माजी का मंदिर संवत् 1988 में इस क्षेत्र के गौड़ ब्राह्मणों द्वारा बनवाया गया था।

माघ पूर्णिमा को तीन नदी, तीन देव, तीन प्रांत और तीन क्रियाकांडों का यह तीर्थ वस्तुत: अपने असाधारण कल-कल्प का सुमेरू बना रहता है। पास ही साबला गाँव में संत मावजी का लोकमान्य मठ है। एकादशी को यहाँ के पीठाधीश अपने समस्त वैभव के साथ शाही ठाठबाट से मेले में पधरावणी करते हैं। सारा मेला धार्मिक ताने-बाने में बुनता-तनता दृष्टिगोचर होता है। मावजी की आगमवाणियों का पाठ और अनेकानेक भविष्यवाणियों का वाचन श्रद्धालुओं के लिये अचरज भरा होता है।

पन्द्रह दिन के इस भरपूर मेले में भीड़ इतनी रहती है कि पांव रखने की जगह नहीं मिलती। एक हरड़ाटा आया कि एक स्वांस में पूरी सड़क पार हो गई। यहां अनेकानेक व्यापारी सारी आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं। चड़स, हल, कुदाली, खुरपी से लेकर तीर, कमान, तलवार, गोफण, बंदूक, कटार, भाले यहाँ मिलते हैं। पीतल, तांबे-मिट्टी के बर्तन, नकली गहनों का असली सिणगार, काजल, टीकी, बिन्दी, कांच-कांगसी, फूंदी-रुमाल और गोदनेवाली मशीनों के नाना गोदने इस स्थल की छटा को बढ़ाते हैं।

बेणेश्वर का मेला माघशुक्ला एकादशी से माघशुक्ला पूर्णिमा तक भरता है। मठाधीश पूजा के साथ मेले को विधिवत प्रारम्भ करते हैं। यहां भील और अन्य जाति के लोग नदी-जल में अपने पूर्वजों की अस्थियाँ विसर्जित कर पूजा-आराधना करते हैं। माही नदी का यह क्षेत्र गुप्त क्षेत्र अर्थात पावन क्षेत्र कहलाता है।

यहाँ मुख्य शिवमंदिर में दिन में दो बार पूजा की जाती है। चढ़ावा सभी भक्त चढ़ा सकते हैं पर मूर्ति पुजारी के अलावा कोई भी नहीं छू सकता। प्रात: की पूजा में गूगल और खोपरा तथा शाम की आरती में भभूत का प्रयोग होता है जबकि इसके ठीक पास विष्णु एवं ब्रह्माजी के मंदिर में पांच बार की पूजा दी जाती है।

मावजी की साबला गादी के वर्तमान पीठाधीश अच्युतानंदजी महाराज ने बताया कि कृष्ण ने मावजी के रूप में बेणेश्वर को वृन्दावन और साबला को मथुरा के हमशक्ल मानते हुए ब्रजक्षेत्र की अधूरी रास को यहाँ लीलामय कर पूरी की।

रूपदास डामोर (70) ने बताया कि साढ़ा तीन दिन तक मावजी बांसुरी वादन किये कदम्ब वृक्षों की वनराई में भटकते रहे पर किसी ने उनकी नहीं सुनी। अंत में पास के सुनैया पर्वत पर कुछ लोग एकत्र हुए। उन्होंने मावजी के प्रति अपनी पूर्ण श्रद्धा एवं भक्ति की अभिव्यक्ति दी तब मावजी ने बांसुरी से शक्तिपात करते हुए उनका शुद्धिकरण किया और कहा-''तुम सभी साधु स्वभाव के हो इसलिए आज से साद के रूप में पहचाने जाओगे।

- शेष पृष्ठ सात पर

शब्द रंजन

उदयपुर, मंगलवार 01 अगस्त 2023

सम्पादकीय

सावन सूना विरह बिन

सावन में अब सब सूना-सूना लग रहा है। अब न वे हिंडोला खाती, साड़ी का पल्लुई झाला देती, रिमझिम बरसात की फुहारों की झपटी में आती ललनाएं दिखाई देती हैं न गीतों की स्वरलहरियों में लहरों के समंदर पर अपनी विरह नैया को भामर में धकेलती विरहणियों की सृजना सुनाई देती है जिससे हर मन करूणा की चितवन में पोर-पोर भीग जाता।

अब न वे पुराने बांसजनित तड़कते छप्पर रहे न पपीहे वैरी की पिउ-पिउ रही। कंठों पर आसीन वे जुमले भी नहीं रहे जो परदेश रह रहे प्राणनाथ को भीगी धोई मनुहारों के आह्वान की बुहारी से बुहार सके। अब अपने को गोरी कहने, कहलाने वाली सुन्दरी नहीं मिलेगी न सायबा को घूंघट की ओट से इशारा देती धण। अब नौकरी को एक टके की और सवा लाख की घर की नार माननेवाली अमूल्य निधि नहीं रही। नौकरी पहले, वह भी लाखों की। नार बाद में देखी जायगी।

पहले बेपढ़ी अपनी उदात कल्पनाओं के सीवन से साहित्य की जो चटाई बुनती थी, मोबाईल जैसी आधुनिक अटावणी ने चौपट करदी। अब मारुणी की शिकायत नहीं रही कि उसके पनामारू उसकी सुध नहीं लेते। अब तो वह स्वयं पदे-पदे हलो-हाउ कर अपने प्रियवर की खबर ही नहीं लेती, उसे खबरदार कर सावचेत भी करती रहती है।

अब दोनों में वैसा आकर्षण नहीं रहा बल्कि घर्षण बढ़ा हुआ देखा जा रहा है। वे परिवार और उससे जुड़े परिजन सपन में भी साकार नहीं रहे जब नवेली बहू को सगुणी सास कहती, 'बहूवड़! जरा अपने गहने तो पहन के दिखाओ।' बहू जवाब में सौलह सिणगारी जवाब देती बड़े हरख के साथ कहती, ''सासुजी म्हेरे! गहने को कांई पूछो। गहने तो मेरा यह सगला परिवार ही है। श्वसुरजी मेरे परिवार-गढ़ के राजवी हैं तो सासुमां रत्नों की भंडार। जेठजी बाजूबंद तो जिठानी उसकी लूंब। देवरजी हाथीदांत के चूड़ले तो देवरानी उसकी मजीठ। सायबजी म्हेरे सिर के सेवरे तो म्हें सेजां की सिणगार। सासुमां, आपको लख-लख धन्य कि आपने ऐसा लाखीणा पुत्ररत्न पैदा किया।''

आज का समय उस समझ का नहीं रहा। अब वैसी सगुणी सास नहीं तो गो की जाई वैसी बहू भी नहीं। एकल परिवार भी बेमौसम बेनाला कलकल की बजाय कचकच करता कर्कश दिखेगा और कहत कबीर सुनो भाई साधो, पांचवें आरे के ही ये हाल हैं तो छठा आरा जब आयेगा तो और अधिक बिगड़े सांड की तरह सबको न्यारे-न्यारे वाट देता धक्कमधक्की खिलाएगा। अस्तु..

वर्षीतप पारणे पर उमरावबाई का बहुमान

स्व. गजेंद्रजी बाबेल की पुण्य स्मृति में श्रीमती उमरावबाई धर्मपत्नी स्व. रोशनलालजी बाबेल (से. 4 उदयपुर) की ओर से चौगान जैन मंदिर पर 125 वर्षीतप के पारने करवाएं गए और सबको प्रभावना वितरित की गई। इस अवसर पर मन्दिर मण्डल द्वारा उमरावबाई एवं परिवारजन का बहुमान किया गया।

सूचना

डॉ. भानावत परिवार का नया निवास
352, श्रीकृष्णापुरा की बजाय
फ्लैट नं. 904, आर्ची आर्केड, राम-लक्ष्मण वाटिका के पास,
मुनि सुव्रतस्वामी जैन मंदिर परिसर, न्यू भूपालपुरा, उदयपुर है।

धर्मक्षेत्रे : यात्रा मथुरा-वृंदावन की (3)

-अर्थांक भानावत-

एक सिलसिला
कई रुकावट
जीवन के इस घाटे में।
वक्त ने बांटे
जो सन्नाटे
आगए मेरे झांसे में।।

मथुरा स्थित कृष्ण जन्मस्थली के आंगन में उठकर हमारे तीसरे दिन 16 अप्रेल 2023 का पहला लक्ष्य वहीं के दर्शन करना था। श्रीकृष्ण का जन्म देवकी और वासुदेव के घर एक जेल की कोठरी में हुआ था। उनके मामा कंस को आकाशवाणी द्वारा मालूम चला कि देवकी की आठवीं संतान से उसकी मृत्यु होगी इसलिए उसने देवकी और वासुदेव को कालकोठरी में बंद कर दिया। परम्परा के अनुसार, श्रीकृष्ण को समर्पित एक मंदिर का निर्माण उनके पड़पोते वज्रनाभ ने किया था।

हमारे लिए यह अभी तक की देखी सबसे व्यवस्थित और भव्य जगह थी। एक व्यक्ति अगर यहां गुम हो जाए तो हम हैरान नहीं होते। यहां पर नाकाबंदी भी ऊंचे स्तर की थी। मोबाइल फोन तक की अंदर ले जाने की अनुमति नहीं थी। लाइन में लगकर हम अंदर गए। वहां तीन मंदिर देखे जो अलग- अलग प्रकार में भव्य थे। एक में कृष्ण बांसुरी बजाते और राधा उनके कंधे पर। दूसरे में कृष्ण की मूर्ति चट काली चमकती हुई और तीसरे में राम सीता और लक्ष्मण की असली प्रतीत होती जीवंत मूर्ति।

इसके बाद हम पहुंचे उस कोठरे में जहा कृष्ण का जन्म हुआ। हमने वहां अलग-सी अनुभूति महसूस की। कोठरे के अंदर कृष्ण की एक छोटी मूर्ति थी। वह पूरा रोशनी के मुक्त था पर एक अलग प्रकार में भव्य किन्तु जीवन प्रतीत करने की कल्पना करना भी मुश्किल था। एक भव्य जन्मस्थली के दर्शन कर हम हमारे होटल पहुंचे। भोजन का सेवन करने तक हमारी ट्रेन का समय नजदीक आ चुका था और हमारे पास समय की कमी थी। इसी को मद्देनजर रखते हम पहुंचे बृजवासी स्वीट्स जो कृष्ण जन्मस्थली के पहले द्वार के बाहर मथुरा के प्रसिद्ध पेड़ों का सबसे प्रसिद्ध मिष्ठान भंडार है।

यहीं हमने अपने सभी परिवारवालों के लिए पेड़े लिए और मेरी मां और में चले कंस किले की ओर। एक साइकिल वाली रिक्शा में सफर तय कर हम पहुंचे और जो हमने देखा हम उससे आश्चर्यचकित हुए। मथुरा के राजा का किला जैसे कोई खंडहर हो। मेरे मन में सबसे पहले उदयपुर के राजमहल की स्मृतियां आई। इतिहास के रुख में कंस किले की ओर देख मैंने सोचा कि जीवन के घाटों के सिलसिले में कई रूकावटे हैं। हम उनमें किस प्रकार संयम बनाए रख पाते हैं। यह तय करता है कि जब वक्त हमें सन्नाटे बांटेगा तो हम उन कठिनाइयों पर अमल कर पाएंगे या कंस की तरह हमारे सपनों से बने किले भी हमारे जाने के बाद एक खंडहर की तरह रह जायेंगे। यह हमारा मथुरा में आखिरी पड़ाव था।

स्टेशन पहुंचकर भाई शब्दांक को दिल्ली के लिए अलविदा कहा और उदयपुर की ट्रेन में सवार हुए। हमारे कोच में एक बुजुर्ग जोड़ा मिला। वे नाथद्वारा श्रीनाथजी के दर्शन करने जा रहे थे। एक ही कोच में एक सफर का अंत हो रहा था और एक सफर की शुरुआत। जो सज्जन हमें ट्रेन में मिले वे दिल्ली रहते थे। जब आजादी और बंटवारे का ऐलान हुआ तो उनके

पिताजी सिंध में जो कुछ था वह वहीं छोड़ मात्र उनके शरीर पर जो वस्त्र थे वो पहन कर दिल्ली आ गए। जो मुसलमान भारत छोड़ कर गए थे उनके एक छोटे से घर में सिंध से आए 7 परिवार एक एक कमरे में अपने परिवारों को लेकर रहने लगे।

उन्होंने हमें बताया कि सन् 1948 में उनके पिताजी दर्जी हुआ करते थे। घर चलाने के लिए अपनी मशीन को सर पर उठा कर घर लाते थे और मोमबत्ती के उजाले में कपड़े सिला करते थे। उन्होंने हमें बताया कि उनकी बेटी न्यूजर्सी, न्यूयॉर्क रहती है और बैंक ऑफ अमेरिका में वाइस प्रेसिडेंट रह चुकी है। यह सब सुनकर मुझे दिलचस्पी तो बहुत लगी पर यह बात मेरे मन में घर कर गई थी, कि जीवन के एक सिलसिले में एक मेहनती सज्जन ने अपना खुद का देश छोड़कर भी इतना हौसला और जनून रखा कि उनकी पोती सिंध से अमेरिका तक पहुंच गई और एक कंस था जिसका किला आज भी खंडहर है। - **समाप्त**

मेनार के सेवकों से ही मुगल सैनिक नौ-दो-ग्यारह हो गये

- डॉ. तुक्तक भानावत -

घटना उदयपुर से 45 किलोमीटर दूर स्थित मेनार गांव की है जो होली पर तलवारों की गैर के लिए प्रसिद्ध है। वहां के निवासी मांगीलालजी मेघवाल ने बताया कि मेनार में यों तो मेनारिया जाति के लोगों की ही सर्वाधिक बस्ती है और इसी कारण यह गांव भी मेनार नाम से प्रभुत्व लिये है पर तब भी सेवक के रूप में अन्य जाति के लोग भी रहते थे जो उनके सेवादार बन अपना जीवन यापन करते थे। यह व्यवस्था लगभग सभी कस्बों में थी जो कहीं-कहीं आज भी देखने को मिलती है।

यह वह समय था जब मुगलों का जगह-जगह आधिपत्य बढ़ता जा रहा था। मेनार को भी अपने अधीन करने मुगलों की एक टुकड़ी मेनार आई तब उन्होंने कुछ लोगों को बुलाया और कहा कि हमारे घोड़ों के लिए दानेपानी की व्यवस्था करनी है। उनके बुलावे पर चार व्यक्ति वहां पहुंचे। उनमें से एक चतरा बा (चतुर्भुज मेघवाल) गांव के कोतवाल थे। दूसरे किशना बा (किशनलाल कुम्हार, प्रजापत) थे। तीसरे हूमा बा (हुकमचन्द नाई) तथा चौथे टेका बा (टेकचन्द लुहार) थे। ये चारों ही बुजुर्ग थे। ये बड़े हष्टपुष्ट, ऊंची कदकाठी, लम्बी दाढ़ी तथा दिखने-दिखाने में बड़े बहादुर तथा शौर्यजनित असरकारी आवाज लिये थे।

उनका ऐसा रौबीला रूप देखकर मुगल सिपाही बोले, 'क्या सबके सब ठाकुर हो?' इस पर उन्होंने जवाब दिया, 'नहीं, हम तो उनके सेवक हैं।' यह सुनते ही सैनिक दंग रह गये और उनकी सिट्टीपिट्टी घूम हो गई। मन-ही-मन सोचने लगे कि जब उनके सेवक ही ऐसे बलिष्ठ बहादुर रणबाज हैं तो स्वामी कैसे होंगे? इस भय के कारण पूरी फौज बिना विश्राम किये वहां से नौ-दो-ग्यारह कर गई। यह फौज एक बड़ली के नीचे रूकी थी। वह स्थान 'फौज की बड़ली' नाम से जाना गया। कालान्तर में वहां सरकार ने डाक बंगला बनाया।

चारों सेवकों ने जब गांव वालों को आपबीती यह घटना सुनाई तो उनकी पीठ थपथपाई और कहा कि यदि जरा भी कमजोरी दिखाई होती तो ये बदमाश पूरे गांव को अपने आक्रामक रवैये से लूटपाट कर बर्बाद कर देते। तलवारों की गैर के आयोजन की पृष्ठभूमि में भी इस घटना का उत्स रहा है।

मांगीलालजी ने बताया कि इस गैर पर सबसे पहले डॉ. महेन्द्र भानावत ने ही धर्मयुग में लिखकर इस घटना को जगजाहिर किया था। इसका जिक्र आज भी गांव के लोग गर्व के साथ करते हैं।

मांगीलालजी के अनुसार उनके बड़ेरे चतुर्भुजजी गुजर गये तो उनकी चाह के अनुसार एक सौ मन के मालपुए का जीमण कर पूरे चौखले को जिमाया। उनका भाट-बड़वा गंगाराम जब भी आता है तो शुभराज स्वरूप विरूदावली में कुछ दोहों का उच्चारण करता है। उनमें से यह विरूद जो मुझे याद है, वह है-

मेता ठावा मेणार में, पड़े धाक परताप।
नजराणो करूं ऊंकारनाथ रो, वद-वद करूं बखाण।।

ऊंकारनाथ के सम्बन्ध में मांगीलालजी ने बताया कि ये मेनारिया समाज के ऋषि थे। उनके नाम से पहचान लिये ऊंकारेश्वर चौरे पर गैर आयोजन से पूर्व जमराबीज को जाजम ढलती है अर्थात् चौरे यानी चबूतरे पर बिछात होती है। वह जाजम आज भी सुरक्षित है जो मेवाड़ महाराणा द्वारा बख्शीश में दी गई। यही नहीं, दरबार द्वारा दो बड़ी साइज के जंगी ढोल भी दिये गये जो गैर के वक्त ढोली समाज के मोतबीर बजाते हैं।

ऊंकारेश्वर चौरा उस स्थल पर है जहां से गांव का निकास होता है। इसे बड़ा पवित्र स्थान मानते हैं। कोई भी जूते पहनकर इस पर नहीं बैठता। औरतें तो जब भी इधर से निकलती हैं तो पांवों में जूते तक नहीं पहनतीं और न खुले मुंह विचरण करती हैं। न्यूनाधिक रूप में इस परम्परा का वर्तमान में भी निर्वाह हो रहा है।

रेत के झूंपों में संगीत की स्वर लहरियां देते वादक (5)

- डॉ. महेन्द्र भानावत -

अलगोजा :

अलगोजा फूंक वाद्य है। यह बांसुरी जैसी दो नलिकाओं की संयुक्त उपस्थिति वाला वाद्य है। इसकी आवाज बड़ी मधुर होती है। मेलोंठेलों में

अलगोजा

अलगोजा बजाने वाले की मोहक ध्वनियां हर मेलार्थी को आनंदित किये रहती है।

ऐसे कलाकार बहुत ही बिरले होते हैं जो अलगोजा मुंह की बजाय नाक से बजाते हैं। उनमें जयपुर के समीप बाड़ा पदमपुरा के रामानन्द चौधरी का नाम उल्लेखनीय है।

उदयपुर के शिल्पग्राम मेले में रामानन्द ने बताया कि नाक की नथुनों में दोनों अलगोजों की नोक फंसाये श्वांस-प्रश्वांस को नियंत्रित कर इसे बजाना पड़ता है। यह बड़ा जटिल और होशियारी के साथ ही निरन्तर वर्षों के अभ्यास से सीखा जाता है। पांच-छह वर्ष तो उन्हें भी साधना करनी पड़ी।

रामानन्द को ग्यारह वर्ष की उम्र में अपने ही गांव के महादेव बाबा से शिक्षा मिली जो सौ वर्ष पार की उम्र लिये थे। वे दूर जंगल में पशु चराने जाया करते और ये उन्हें रोटी-पानी पहुंचाने का काम करते।

इससे खुश होकर उन्होंने रामानन्द को अलगोजा बजाना सीखाना प्रारम्भ कर दिया पर वे अधिक समय नहीं जी सके फलस्वरूप इन्होंने ही अभ्यास करना शुरू कर दिया। वे कालान्तर में पारंगत हो गये। लगभग पचास वर्षीय रामानन्द चूंदड़ी का साफा बांधे घनी काली मूंछों में जब पांव में घुघरू बांधे अलगोजा के स्वर साधते हैं तो स्वंय तो खुशमिजाज लगते ही हैं सुनने वाले भी कम आनंदित-प्रफुल्लित नहीं होते।

लेकिन थार-रेगिस्तान जैसलमेर के गाले की बस्ती नामक छोटे से गांव में रहने वाले ईशाकखां ने अलगोजा के माध्यम से पूरे विश्व में अपनी धाक जमा दी। जैसलमेर के लोकसंगीत सर्वेक्षण की यात्रा के दौरान ईशाकखां ने भी शिविर में रेकार्डिंग करा सबको चमत्कृत कर दिया।

ईशाकखां ने दस-बारह वर्ष की बाल उम्र में मुरादखां के सान्निध्य में स्वर-साधना करते विभिन्न राग-रागीनियों का अभ्यास किया और चार-छह घण्टा प्रतिदिन की साधना कर धीरे-धीरे अपनी पहचान बनाई। अलगोजा के साथ ईशाकखां ने मोरचंग-मुरली को भी अपना प्रिय वाद्य बनाते हुए चिरमी, झेडर, मूमल, पिणिहारी जैसे लोकप्रिय गीतों की बड़ी मोहक धनुं निकालीं।

ईशाकखां ने अपनी 25-30 वर्षीय उम्र में ही रूस, फ्रांस की यात्राएं कर रेगिस्तानी लोकसंगीत की धूम मचादी। उनकी स्कूली पढ़ाई तो नहीं हुई किन्तु अपने पारम्परिक फूंक वाद्यों की पढ़ाई में तो कमाल की उपलब्धि प्राप्त की। जहां-जहां भी ईशाक ने कार्यक्रम दिये, वहां के आकाशवाणी तथा दूरदर्शन केन्द्रों पर भी श्रोता-दर्शकों में अपनी पैठ जमादी।

ईशाकखां ने बताया कि विदेशी संस्कृति ने उसे कहीं से प्रभावित नहीं किया। उसे तो अपने देश का रहन-सहन, खान-पान और सबसे हेलमेल से रहना अच्छा लगता है। वह तो विदेश में भी अपने घर में सिलबट्टे पर पीसी मिर्च का बना गोटा अपने साथ ले जाता है और पानी में घोलकर भोजन के साथ उसका उपयोग करता है तो ही रंजता है अन्यथा वहां के भोजन में उसे कोई स्वाद नहीं लगता है। ऐसे ही वह अक्षर ज्ञान से सर्वथा शून्य है, केवल आड़ेटेढ़े अपने नाम के हरूप जरूर सीख गया है।

ईशाकखां ने बताया कि दुधारू जानवर को चराने वाले चरवाहे अलगोजा बजाकर अपने पशुओं को भोजन-पानी के समय खूब तृप्त कर देते हैं। इस बाजे की मीठी तान से न केवल चरवाहा ही मदमस्त होता है, पशु भी उसके साथ बने रहते हैं।

उसने बताया कि अब सबकुछ बढ़ता जा रहा है। इसलिए गांव की बापदादों, बड़ेरों की जो सीख ली है उससे आज का जवान वंचित हो रहा है। अब केवल खेती धंधा और घर का कामकाज जिंदगी नहीं संवार सकता और न जीवन को खुशहाल ही बना सकता है।

तब भी जब जो गाना-बजाना हमें विरासत में मिला है उसे नहीं छोड़ना चाहिए और जब तक मन लगाकर युवा होशियारी से उसे गाने-बजाने में पारंगत नहीं होगा तब तक वह अपने परिवार का पेट भी नहीं भर सकेगा। सरकार को बड़ी गम्भीरता से इसके लिए सोचना चाहिए नहीं तो हमारे देखते-देखते ये सब चीजें नदारद होती मिलेंगी। ईशाकखां जब घर से बाहर निकलता है तो जितना अच्छा वह सजता है उतना ही अच्छा अलगोजे को मोतियों की जड़ी रेशमी लूम में लुकायमान रखता है।

माटा :

माटा वाद्य

माटा नामक वाद्य मिट्टी का बना होता है। इसमें नर तथा मादा होते हैं। इन पर बकरे की खाल मढ़ी होती है। ये पाबूजी की विरूदावली गाने वालों के साथ बजाये जाते हैं। इनकी गूंज नगाड़ों जैसी दूर-दूर तक सुनाई देती है। इसके साथ घुघरू की ध्वनि माटों की कठोर ध्वनि की संगत लिए कोमलता का मनोरम एहसास कराती है।

गायकी रात-रात भर चलती रहती है। गावणी के साथ प्रमुख गायक का नृत्य श्रोताओं को मंत्रमुग्ध किये रहता है। ग्रामीणजन कार्यसिद्धि अथवा किसी भी प्रकार की खुशहाली पर यह आयोजन करते हैं।

डैरू :

डैरू वाद्य

लोकदेवता गोगाजी के भक्त धाणक जाति के लोगों का यह प्रिय वाद्य है। ये लोग गायक और वादक होते हैं। रात-रात भर प्रमुखत: गोगाजी की विरूदावली तो गाते ही हैं। इसके अलावा निहालदे सुलतान, ढोलामारू, हीररांझा, गोपीचन्द भरथरी को भी बखूबी गाते हैं। भजन भाव में भी इन्हें बुलाया जाता है।

एक मण्डली में एक गानेवाला तथा दूसरा उसके साथ डैरू बजानेवाला होता है। बड़े फलक पर जहां बड़ा समूह जुड़ता है वहां आठ-दस तक गायक-वादक अपना समा बांधते हैं। डैरू के साथ कपोला बजाया जाता है जो कांसे का बना होता है। इस गावणी के साथ नृत्य का सिलसिला चार चांद लगा देता है। कहीं-कहीं अकेला गायक ही डैरू बजाकर आनन्द की वर्षा कर देता है।

- समाप्त

अकादमी पहुंची लेखक के द्वार, डॉ. भानावत को किया सम्मान समर्पण

उदयपुर (ह. सं)। कलम और कागज़ को जीवन का ध्येय मानकर कर्मशील रहे लोककलाविद डॉ. महेन्द्र भानावत को राजस्थान

साहित्य अकादमी अध्यक्ष दुलाराम सहारण एवं सचिव बसन्त सोलंकी ने उनके निवास पर पहुंच कर इक्यावन हजार रुपये की राशि का चैक,

शॉल एवं सम्मानपत्र भेंट किया। डॉ. भानावत को अकादमी द्वारा विशिष्ट साहित्यकार सम्मान से समादृत किया गया है। उनकी अब तक एक सौ छह किताबें साहित्य, लोककला एवं अणुव्रत दर्शन पर प्रकाशित हो चुकी हैं। डॉ. भानावत जीवन के छिय्यासी वसन्त देख चुके हैं तथा घर पर ही सृजनरत रहते हैं।

इस अवसर पर साहित्य अकादमी अध्यक्ष दुलाराम सहारण ने कहा कि वरिष्ठ वयोवृद्ध लेखकों का सृजन सम्मान करना अकादमी की सारस्वत परम्परा है। जहां लेखक समादृत होता है वह पुण्यधरा कहलाती है। साहित्य अकादमी के सचिव बसन्त सोलंकी ने डॉ. भानावत को शॉल पहनाकर सम्मानित किया तथा उनके स्वस्थ एवं दीर्घायु होने की कामना की। अभी कुछ दिनों पूर्व भी सहारण ने साहित्यकार गोवर्धनसिंह शेखावत के सीकर स्थित निवास पर जाकर इसी प्रकार विशिष्ठ साहित्यकार सम्मान समपर्ण किया था।

वरिष्ठ साहित्यकार किशन दाधीच ने सहारण की इस कार्यशैली की प्रशंसा की है। उन्होंने कहा कि लेखक के निवास पर पहुंच कर सम्मान समपर्ण करने से अकादमी स्वयं सम्मानित होती है। दाधीच ने कहा यह डॉ. भानावत का नहीं समूचे मेवाड़ का सम्मान है। इससे पूर्व भी डॉ. भानावत को उत्तरप्रदेश हिंदी संस्थान द्वारा दो लाख इक्यावन हजार रुपये के शिखर सम्मान से समादृत किया जा चुका है।

अकादमी का आभार मानते डॉ. भानावत ने कहा कि साहित्य समाज ने लोकसाहित्य को सदैव ही दोयम दर्जे का साहित्य माना है। वे इसे चुनौती मानते संतुष्ट हैं कि जिस विषय पर उन्होंने पहलीबार लिखा उस पर पचास से अधिक शोधप्रबंध लिखे जा चुके हैं। डॉ. भानावत ने अकादमी अध्यक्ष सहारण को लोकदेवता वीर कल्लाजी राठौड़ तथा निर्भय मीरां पुस्तक भेंट की। डॉ. भानावत ने कहा कि जहां-जहां मीरां कृष्ण को ढूंढ़ती रही, वहां-वहां अपनी छह प्रांतीय यात्राओं में हम मीरां को खोजते रहे। प्रारंभ में डॉ. भानावत कुटुम्ब के डॉ. तुक्तक एवं रंजना ने मान्य आगन्तुकों का स्वागत किया।

डॉ. भानावत को पुरस्कृत करने पर डॉ. श्रीकृष्ण 'जुगनू' ने लिखा -

अकादमी ने एक सराहनीय कदम उठाया और डॉ. भानावतजी के घर पहुंचकर अभिनंदन किया। हमें स्मरण रखना चाहिए कि भानावत साहब एक पूर्णकालिक लेखक और पत्रकार रहे हैं। ऐसा कोई दिन नहीं, जब वे लिखते नहीं। सोचते भी लेखन में और सोते भी लेखन में! शब्द के साधक, स्मृतियों के आराधक, लोक के प्रतिष्ठापक, अतीत के अपने तरीके के शोधक और संशोधक!

लोकसाहित्य के लिए उन्होंने अपना जीवन दे दिया। वे आज लोकसाहित्य के सिद्ध हैं। साबर मंत्र जैसा जाप जैसे कौतुक करता है, वैसे ही उनका सृजन इक्के दुक्के नहीं, हजारों अध्येताओं के शोध अध्ययन में सहायक बना है।

उन्होंने बीज के रूप में लिखा, हमें वट वृक्ष के रूप में लगता है। उनकी पोथियां शोध प्रबंधों के रूप में फलवान हुई हैं। देशभर के विश्व विद्यालय साक्षी हैं।

कबीर की तरह आंखनदेखी और लोककही लिखकर उन्होंने महेंद्र- मन को मथा और नवनीत लिखा! उस ज्ञानाश्रय में कितने लेखकों का प्रस्थान बिंदु है, यह जानकर ही मैं गौरव पाता हूं।

प्रलोभन शून्य, स्पष्ट वक्ता और रंजन के अंजन से आंखों को उजास देने वाले, अपनी प्रतिभा का स्वयं निर्माण और निवेश करने वाले भानावत जी सदा सर्वदा सम्मान योग्य विभूति हैं।

सिटी पैलेस संग्रहालय में दुर्लभ मानचित्रों की प्रदर्शनी

उदयपुर (ह. सं.)। सिटी पैलेस के संग्रहालय में रियासतकाल के दुर्लभ चित्रित एवं मुद्रित मानचित्रों पर प्रदर्शनी आयोजित की गई है। पेपर प्रोजेक्ट के तहत दी गेटी फाउण्डेशन के अर्थ सहयोग से मेवाड़ संग्रह के दुर्लभ इन नक्शों और कार्टोग्राफिक दस्तावेजों को सिटी पैलेस के जनाना महल में प्रस्तुत किया गया है।

संग्रहालय में आने वाले पर्यटक प्राचीन कार्टोग्राफिक प्रिंटर और चित्रकारों द्वारा तैयार किए गए नक्शों, चित्रों और उनसे संबंधित जानकारियों को समझ सकेंगे। मेवाड़ राज्य के प्राचीन स्थानों, परिदृश्यों और स्थलाकृतियों के साथ ही राजमहलों की प्रतिष्ठित वास्तुकला को भी देखा व समझा जा सकता है।

मेवाड़ राज्य का यह दुर्लभ खजाना पहलीबार महाराणा मेवाड़ चैरिटेबल फाउण्डेशन, उदयपुर के क्यूरेटोरियल और अनुसंधान दल द्वारा 1700 के दशक की इस महत्वपूर्ण सामग्री को संग्रहित व संरक्षित कर सिटी पैलेस संग्रहालय प्रदर्शित किया जा रहा है।

इस परियोजना की सलाहकार क्यूरेटर डॉ. शैलका मिश्रा ने कहा कि प्रदर्शनी को विभिन्न विषयों के आधार पर क्यूरेट किया है। हमने सावधानीपूर्वक मेवाड़ के महाराणाओं के समय के मेवाड़ और ब्रिटिश चित्रकारों द्वारा तैयार कुल 53 वस्तुओं को सारणी के साथ प्रदर्शित किया है जिनमें 7 पेंटिंग, 31 मानचित्र, 1 वास्तु ड्राइंग, 12 फोटो, 1 एल्बम और 1 बहिड़ा सविस्तार मानचित्र, परिदृश्य चित्र आदि सम्मिलित है। इस सामग्री के माध्यम से मेवाड़ की विरासतों के इतिहास को सरलता से समझा जा सकता है।

प्रदर्शनी आयोजन पर महाराणा मेवाड़ चैरिटेबल फाउण्डेशन के ट्रस्टी डॉ. लक्ष्यराजसिंह मेवाड़ ने कहा कि इस ऐतिहासिक प्रदर्शनी के लिए मैं गेटी फाउण्डेशन और सिटी पैलेस संग्रहालय की क्यूरेटोरियल और रिसर्च टीम को हार्दिक बधाई देता हूँ जिन्होंने मेवाड़ की इन जीवंत विरासतों को संरक्षित करते हुए, इसे भारत ही नहीं वरन् विश्वस्तर पर जिज्ञासुओं, शोधकर्ताओं और दर्शकों के लिए प्रदर्शित किया है।

बाजार / समाचार

डॉ. सारंगदेवोत सम्प्रति संस्थान के अध्यक्ष बने

उदयपुर (ह. सं.)। राजस्थान विद्यापीठ विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. शिवसिंह सारंगदेवोत सम्प्रति संस्थान के अध्यक्ष बनाये गये। संस्थान के प्रवक्ता सदस्य डॉ. शूरवीरसिंह भाणावत ने बताया कि अब तक अध्यक्ष पद पर कार्य कर रहे लोककलाविज्ञ डॉ. महेन्द्र भानावत ने भविष्य में अध्यक्ष पद पर बने रहने की अनिच्छा व्यक्त की तदनुसार सर्वसम्मति से डॉ. सारंगदेवोत को अध्यक्ष पदासीन किया गया। सचिव डॉ. तुक्तक भानावत पुन: इस पद पर कार्य करते रहेंगे।

इस अवसर पर संस्थापक डॉ. महेन्द्र भानावत ने बताया कि सन् 1993 से कार्यरत इस संस्थान ने साहित्य, संस्कृति, शिक्षा और कला के क्षेत्र में ख्यातिप्राप्त विद्वानों का सान्निध्य लेकर विभिन्न संगोष्ठियां, व्याख्यानमालाएं तथा कविसम्मेलन आदि आयोजित किये हैं। प्रान्त की राजस्थान साहित्य अकादमी तथा राजस्थानी भाषा साहित्य एवं संस्कृति अकादमी के सहयोग से ग्राम्यांचलों तक सम्प्रति संस्थान ने साहित्यिक चेतना जगाई। सचिव डॉ. तुक्तक भानावत ने उम्मीद जताई कि डॉ. सारंगदेवोतजी के आने से सम्प्रति संस्थान के कार्यक्रमों को और अधिक गति-प्रगति एवं विस्तार मिलेगा।

श्रीराम प्रोटीन्स लि. का राइट्स इश्यू खुला

उदयपुर (ह. सं.)। श्री राम प्रोटीन्स लि. (एनएसई : एसआरपीएल) कपास बीज प्रसंस्करण उद्योग में एक अग्रणी कंपनी है। कंपनी का राइट्स इश्यू वर्तमान में खुला है, जहां कंपनी ने अपने शेयरधारकों को रिकॉर्ड तिथि के अनुसार वर्तमान में स्थित प्रत्येक इक्विटी शेयर के लिए 1 राइट्स एंटाइटेलमेंट है। राइट्स इक्विटी शेयर्स के लिए 2.30 रुपये प्रति शेयर का ऑफर दिया जा रहा है। यह इश्यू 10 अगस्त को बंद हो जाएगा।

कंपनी के राइट्स एंटाइटेलमेंट एनएसई पर 15 पैसे पर ट्रैड कर रहे हैं, यह राइट्स एंटाइटेलमेंट गैर-मौजूदा निवेशकों को कंपनी के राइट्स इश्यू में भाग लेने के योग्य बनाता है। कोई भी निवेशक जो कंपनी के फेवरेबल राइट्स इश्यू मूल्य का लाभ उठाते हुए कंपनी के राइट्स इश्यू में भाग लेना चाहते हैं, वह राइट एंटाइटेलमेंट खरीद सकते हैं। एसआरपीएल के राइट्स एंटाइटेलमेंट 15 पैसे पर कारोबार करते हैं और राइट्स इश्यू की कीमत 2.30 है, जबकि गैर-मौजूदा शेयरधारकों के लिए 1 शेयर के मालिक होने की कुल लागत 2.45 रुपये है। इससे पहले, कंपनी ने घोषणा की थी कि उसे शंघाई, चीन से 63277.20 मैट्रिक टन 100 प्रतिशत सूती धागा एनई 32 सीसीएच के निर्यात का ऑर्डर मिला है। कंपनी को इस ऑर्डर से प्रति वर्ष लगभग 50 से 60 करोड़ रुपये राजस्व प्राप्त होने की उम्मीद है, जिसके फलस्वरुप उन्हें सालाना 6 प्रतिशत का लाभ हो सकता है। श्रीराम प्रोटीन्स लि. की स्थापना 2005 में कपास बीज प्रसंस्करण उद्योग में एक अग्रणी कंपनी के रूप में खुद को स्थापित करने के क्लीयर विज़न के साथ की गई थी। श्रीराम प्रोटीन्स लि. की स्थापना 2005 में कपास बीज प्रसंस्करण उद्योग में एक अग्रणी कंपनी के रूप में खुद को स्थापित करने के क्लीयर विज़न के साथ की गई थी।

पुस्तक का विमोचन

उदयपुर (ह. सं.)। तारा संस्थान के निदेशक विजयसिंह चौहान द्वारा हिन्दी आशुलिपि-उच्च गतिवर्धक वाक्यांश (भाग-9) पुस्तक का विमोचन लक्ष्यराजसिंह मेवाड़ द्वारा किया गया। इस पुस्तक के माध्यम से बच्चे अपनी हिन्दी शार्टहैण्ड की गति में उत्तरोत्तर वृद्धि कर सकेंगे।

उल्लेखनीय है कि चौहान द्वारा हिन्दी आशुलिपि विषय पर 11 पुस्तकों का प्रकाशन किया जा चुका है। इस पुस्तक में 9000 से भी ज्यादा हिन्दी व अंग्रेजी बहुल शब्दों का प्रयोग किया गया है। इन पुस्तकों के प्रकाशन से अब हिन्दी आशुलिपि में भी अंग्रेजी के समतुल्य साहित्य उपलब्ध हो गया है। विमोचन अवसर पर तारा संस्थान के मुख्य कार्यकारी एवं सचिव दीपेश मित्तल, शीतल श्रीमाली भी उपस्थित थीं।

जेएलआर इंडिया : सालाना 102 प्रतिशत की वृद्धि

उदयपुर (ह. सं.)। जेएलआर इंडिया ने वित्त वर्ष 24 की पहली तिमाही में पिछले वर्ष की समान अवधि की तुलना में 102 प्रतिशत की वृद्धि के साथ कुल 1048 वाहनों की बिक्री की है। कंपनी ने पहली तिमाही में बिक्री का अब तक का सबसे बेहतरीन प्रदर्शन किया है। यह प्रदर्शन रेंज रोवर, रेंज रोवर स्पोर्ट और डिफेंडर की बिक्री में 209 प्रतिशत की अभूतपूर्व वृद्धि के कारण संभव हुआ। तीनों मॉडलों में निरंतर मांग देखी जा रही है, जिनका मौजूदा ऑर्डर बुक में 78 प्रतिशत का योगदान है।

जेएलआर इंडिया के प्रबंध निदेशक राजन अंबा ने कहा कि जेएलआर इंडिया ने वित्त वर्ष 2024 की पहली तिमाही में रिकॉर्ड बिक्री की है और हमारी मात्रा वित्त वर्ष 23 की पहली तिमाही की तुलना में दोगुनी हो गई है। यह प्रदर्शन जेएलआर ब्रैंड्स की असाधारण हिस्सेदारी और आधुनिक लक्जरी वाहनों के हमारे श्रेणी में अग्रणी कलेक्शन का प्रमाण है। हमारे समझदार ग्राहकों के बीच बढ़ती मांग के कारण, हमारी ऑर्डर बुक मजबूत बनी हुई है और इसमें वृद्धि हो रही है। हम अपनी भारत की आगे की कहानी को लेकर उत्साहित और आश्वस्त हैं। बेहतरीन आधुनिक लक्जरी वाहनों के गौरवान्वित निर्माता के रूप में, हमने वृद्धि करना जारी रखा है, हम अपनी विशिष्टउ डिजाइन लैंग्वेतज और विश्व-स्तरीय सुरक्षा मानकों को प्रदान करने वाली मशहूर ऑल-टेरेन क्षमता को अपनाया है। वित्त वर्ष 23 की दूसरी छमाही में नई रेंज रोवर और नई रेंज रोवर स्पोर्ट के सफल लॉन्च और डिफेंडर को मिली जबरदस्त प्रतिक्रिया के साथ, वित्त वर्ष 24 की पहली तिमाही के लिए ऑर्डर बुक में पिछले साल की समान अवधि की तुलना में 88 प्रतिशत का उछाल आया है। मौजूदा ऑर्डर बुक छह महीने से अधिक की बिक्री को कवर करती है और इसमें महीने-दर-महीने लगातार वृद्धि देखी जा रही है। वित्त वर्ष 24 की पहली तिमाही में जेएलआर प्रमाणित प्रि-ओन्ड बिजनेस में 137 प्रतिशत की वृद्धि हुई।

मधुवन द्वारा सारस्वत सम्मान

भोपाल। यहां की मधुवन संस्था द्वारा आयोजित गुरुवन्दना महोत्सव में मुख्य अतिथि महेश श्रीवास्तव ने कहा कि यह सम्मान शब्द ब्रह्म, नाद ब्रह्म के समस्त साधकों का सम्मान है। अध्यक्षता करते हुए रघुनन्दन शर्मा ने कहा कि उपनिषद में शब्द को ब्रह्म, ब्रह्म को आनन्द, आनन्द को परमानन्द एवं परमानन्द को ही भगवान कहा गया है। यहां शब्द ब्रह्म के साधकों को सम्मानित किया गया है।

आरम्भ में संस्था के निदेशक सुरेश तांतेड़ ने स्वागत वक्तव्य देते हुए बताया कि अब तक लगभग 450 साहित्यकारों, संगीतकारों एवं कलाकारों का सम्मान किया जा चुका है। समारोह में सितारवादक आचार्य पं. रूपकुमार सोनी, रंगकर्मी राजन देखमुख, कवि, कथाकार सन्तोष चौबे, बेला बहार वादक पं. बाबूलाल गन्धर्व, साहित्यकार, पत्रकार शैलेन्द्र पाराशर, तबला वादक पं. विलास खरगोनकर, न्यूरो चिकित्सक प्रो. त्रिभुवननाथ दुबे को उनकी दीर्घ साधना तथा सृजनात्मकता के लिए श्रेष्ठकला आचार्य अलंकरण से विभूषित कर गुरुवन्दना की गई।

द्वितीय चरण में प्रदेश के गीतकारों एवं गजलकारों को भी अक्षर अभिषेक सम्मान से विभूषित किया गया। इसमें गीतकार ऋषि श्रृंगारी, कैलाश तरल, दिनेश प्रभात, हेमन्त श्रीमाल, डॉ. नुसरत मेहंदी, डॉ. अंजुम बाराबंकवी, बद्र बास्ती, ममता वाजपेयी, अनु सपन एवं अतुल शर्मा थे। **- पं. सुरेश तांतेड़**

बाल सुरक्षा नेटवर्क की संभाग स्तरीय बैठक

उदयपुर (ह. सं.)। आगामी विधानसभा चुनाव को लेकर राजनीतिक दलों द्वारा तैयार किए जाने वाले घोषणा पत्रों में विशेष रुप से बालकों के मुद्दों एवं उनके समाधानों को शामिल करवाने एवं लोकतंत्र में बच्चों व किशोर-किशोरियों की भागीदारी बढ़ाने को लेकर बाल सुरक्षा नेटवर्क द्वारा राजस्थान बाल अधिकार संरक्षण साझा अभियान के साथ मिलकर उदयपुर संभाग में अभियान चलाया जाएगा। इस संबंध में संभाग स्तरीय बैठक महान सेवा संस्थान परिसर में आयोजित की गई।

संयोजक बी. के. गुप्ता ने बताया कि इस अभियान के तहत नेटवर्क की सहयोगी संस्थाओं एवं सामाजिक कार्यकर्ताओं के सहयोग से समुदाय स्तर पर ग्राम पंचायतों एवं ब्लॉक स्तर पर अलग-अलग श्रेणियों में शिक्षा से वंचित, दिव्यांग बालकों, विद्यालय जाने वाले, भिक्षावृत्ति में लिप्त, रोजगार हेतु पलायन करने वाले बालकों, बालश्रम से मुक्त कराए गए, सजायाफता माता पिता के बालकों, कचरा बिनने वाले, एचआईवी पीड़ित एवं घुमंतू परिवारों के बालकों से बैठकें कर उनकी समस्याओं को चिन्हित कर आगनवाड़ी कार्यकर्ताओं, शिक्षकों, अभिभावकों, स्वास्थ कार्यकर्ताओं एवं नागरिक संगठनों के साथ संवाद स्थापित किया जाएगा।

नेटवर्क की सहयोगी संस्थान प्रशा की प्रतिनिधि सविता तिवारी द्वारा अभियान के अलग अलग चरणों में होने वाले कार्यक्रमों एवं संभाग स्तरीय बालकों की कार्यशाला की आयोजना साझा की गई। राज्य समन्वयक विजय गोयल ने ऑनलाइन जुड़कर प्रदेशस्तरीय अभियान की जानकारी साझा की। बैठक में जिला बाल श्रम टास्क फोर्स कमेटी के सदस्य सौरभ गुप्ता, वीपी सिंह, स्वतंत्रता सेनानी की नीलिमा बारणा, गायत्री सेवा के नितिन पालीवाल, चाइल्ड फंड इंडिया के शंभूलाल, प्रेम मेघवाल, अलर्ट संस्थान के जितेंद्र मेहता, त्रिमूर्ति सेवा के सारदेश्वर व्यास, लोक विकास के कन्हैयालाल मेनारिया, मानव कल्याण ट्रस्ट के बंशी साकेत, सहयोगी के याकूब मोहम्मद, महान सेवा के राजेंद्र गामठ, डॉ. अन्नु जैन, अरावली यूनियन के गोविंद ओड, चाइल्ड लाइन के नवनीत औदिच्य एवं उदयपुर जिला बाल कल्याण समिति के पूर्व अध्यक्ष ध्रुवकुमार कविया उपस्थित थे।

चार खिलाड़ी राष्ट्रीय शिविर के लिए चयनित

उदयपुर (ह. सं.)। जिंक फुटबॉल अकादमी के चार उत्कृष्ट खिलाड़ियों को जम्मू-कश्मीर में आयोजित होने वाले अंडर-16 बालक वर्ग राष्ट्रीय टीम की तैयारी हेतु शिविर के लिए चुना गया है। इस सफलता ने एक बार पुन: हिन्दुस्तान ज़िंक द्वारा फुटबॉल प्रतिभाओं को निखारने की अपनी प्रतिबद्धता को दर्शाया है। राष्ट्रीय शिविर में जिंक फुटबॉल अकादमी के चार खिलाड़ी, पुनीत कुमार, मोहम्मद कैफ, हिमेश मीणा और प्रेम हसंदक शामिल होंगे जो कि अपनी प्रतिभा दिखाने और भारतीय राष्ट्रीय टीम में प्रतिष्ठित स्थान अर्जित करने के लिए एक महत्वपूर्ण मंच है।

ज़िंक के मुख्य कार्यकारी अधिकारी अरुण मिश्रा ने कहा कि हमें जिंक फुटबॉल अकादमी और इसके असाधारण खिलाड़ियों पर गर्व है जो विभिन्न स्तरों पर उत्कृष्ट प्रदर्शन जारी रखे हुए हैं। हमारी अकादमी के चार खिलाड़ियों को राष्ट्रीय शिविर में शामिल होते देखना बेहद खुशी का अवसर है जो कि देश में फुटबॉल की उत्कृष्टता को बढ़ावा देने के लिए हमारी प्रतिबद्धता को मजबूत करता है।

वेदांता स्पोर्ट्स के अध्यक्ष अनन्य अग्रवाल ने जिंक फुटबॉल अकादमी के चार प्रतिभाशाली युवा सितारों को बधाई देते हुए कहा कि हमारा दृष्टिकोण हमेशा नवीन प्रतिभाओं अवसर प्रदान कर उन्हें तराशना और खेल में उनके विकास और उत्कृष्टता के लिए अनुकूल वातावरण प्रदान करना रहा है। यह सफलता समुदायों पर फुटबॉल के सकारात्मक प्रभाव को भी दर्शाती है। यह खबर उन परिवारों और प्रशिक्षकों के लिए बेहद खुशी, प्रेरणा और गर्व का अवसर है जो हमारे खिलाड़ियों को इस मुकाम तक लाने के लिये निरन्तर प्रयासरत रहे है। जिंक फुटबॉल अकादमी के खिलाड़ी मो. कैफके पिता मो. सईद जो स्वयं एक पूर्व फुटबॉलर हैं ने कहा कि जब मैं शुरुआत में जिंक फुटबॉल अकादमी में कैफ को छोड़ने आया, तो असहज था लेकिन आज, मैं उसकी अब तक की प्रगति और विकास को देखकर प्रसन्न हूँ। मुझे अपने बेटे को खेल में उत्कृष्टता देखकर गर्व महसूस होता है और मैं उसे राष्ट्रीय शिविर के लिए शुभकामनाएं देता हूं। मैं इस तरह का विश्वस्तरीय मंच देने और कैफ जैसे खेल के प्रति जुनूनी इन युवा बच्चों को अवसर प्रदान करने के लिए हिंदुस्तान जिंक को तहे दिल से धन्यवाद देता हूं।

कच्छारा श्री मेवाड़ जैन श्वेतांबर तेरापंथी कांफ्रेंस के अध्यक्ष बने

उदयपुर (ह. सं.)। श्री मेवाड़ जैन श्वेतांबर तेरापंथी कांफ्रेंस के 23 जुलाई को कांकरोली में हुए वार्षिक अधिवेशन में एडवोकेट देवेंद्र कच्छारा निर्विरोध अध्यक्ष मनोनीत किए गए। महामंत्री भूपेंद्र चोर्डिया ने गत बैठक का वाचन एवं प्रगति प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। ट्रेजरार एडवोकेट देवेंद्र कच्छारा द्वारा आय व्यय का ब्यौरा प्रस्तुत किया गया।

अध्यक्षता करते तेरापंथ मेवाड़ कांफ्रेंस के अध्यक्ष राजकुमार फतावत ने उनके 6 वर्ष के कार्यकाल की विस्तार से जानकारी दी। इस दौरान बीच में प्रश्नोत्तरी सत्र रखा गया जिसमें मेवाड़ संभाग भर से आए श्रावक लक्ष्मणसिंह कर्णावट उदयपुर, चंद्रप्रकाश अच्छा देवगढ़, लादूलाल गांधी भीलवाड़ा, राजेंद्र कोठारी केलवा, दिनेशचंद्र केलवा, प्रभाकर नैनावटी भीलवाड़ा, छगनलाल बोहरा उदयपुर, डूंगरसिंह करनावल राजनगर, किरणकुमार कोठारी कुवाथल, रोशनलाल टुकल्या रेलमगरा, दलीचंद कच्छारा आमेट, धनेंद्रकुमार मेहता कांकरोली, हर्षलाल नवलखा राजनगर, नरेश मेहता लंबाड़ी, पवनकुमार कोठारी आदि ने अपने-अपने सवाल किए जिसके फतावत ने जवाब दिए। मंचासीन अतिथि में मुख्य संरक्षक महेंद्र कोठारी, वरिष्ठ उपाध्यक्ष बलवंत रांका, मंत्री दिनेश हिगड़ थे। निर्वाचन अधिकारी महेंद्र कोठारी ने कच्छारा को पद की गोपनीयता की शपथ दिलाई।

राजस्थान साहित्य अकादमी द्वारा कोरोना काल के पुरस्कारों की घोषणा

उदयपुर (ह. सं.)। राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर ने वर्ष 2019-20, 2020-21 एवं 2021-22 के पुरस्कारों की घोषणा की। अकादमी अध्यक्ष डॉ. दुलाराम सहारण की अध्यक्षता में 24 जुलाई को हुई संचालिका की बैठक में अनुमोदन पश्चात इन पुरस्कारों की घोषणा की गई।

वर्ष 2019-20 के पुरस्कार :

अकादमी सचिव डॉ. बसंतसिंह सोलंकी ने बताया कि वर्ष 2019-20 के पुरस्कारों में सर्वोच्च मीरां पुरस्कार जयपुर निवासी गोविंद माथुर की काव्यकृति 'मुड़ कर देखता है जीवन' के नाम घोषित हुआ है। काव्य विधा का सुधींद्र पुरस्कार जयपुर निवासी भानु भारवि की काव्यकृति 'रंग अब वो रंग नहीं', गद्य विधा का रांगेय राघव पुरस्कार गांव पोसानी-सीकर के संदीप मील की कथाकृति 'कोकिलाशास्त्र' व आलोचना विधा का देवराज उपाध्याय पुरस्कार उदयपुर निवासी सदाशिव श्रोत्रिय की आलोचना कृति 'कविता का पार्श्व' को दिया जाएगा।

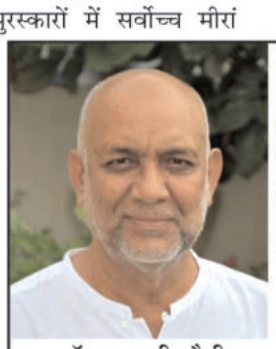

डॉ. आर. डी. सैनी

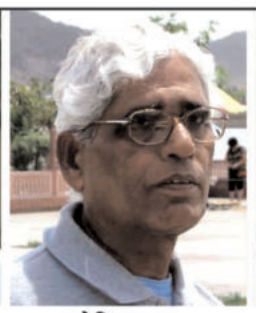

गोविन्द माथुर

डॉ. पद्मजा शर्मा

सदाशिव श्रोत्रिय

माधव नागदा

विमला भंडारी

रीना मेनारिया

विविध विधा का कन्हैयालाल सहल पुरस्कार अंता-बारा में जन्मे ओम नागर की डायरी 'निब के चीरे से' और नाट्य विधा का देवीलाल सामर पुरस्कार जयपुर निवासी नाटककार अशोक राही की कृति 'विष्णुगुप्त चाणक्य...और रावण मिल गया' के नाम घोषित हुआ है। प्रथम कृति पर दिया जाने वाला सुमनेश जोशी पुरस्कार जोधपुर निवासी कहानीकार माधव राठौड़ की कृति 'मार्क्स में मनु ढूंढ़ती' को तथा बाल साहित्य का शंभूदयाल सक्सेना पुरस्कार सलंबूर निवासी पंकज वीरवाल किशोर को दिया जाएगा।

वर्ष 2020-21 के पुरस्कार :

वर्ष 2020-21 के पुरस्कारों में मीरां पुरस्कार पिलानी मूल के जयपुर निवासी डॉ. आर.डी. सैनी की गद्यकृति 'प्रिय ओलिव' को दिया जाएगा। काव्य विधा का सुधींद्र पुरस्कार बीकानेर निवासी गजलकार गुलाम मोहियूद्दीन माहिर को कृति 'आतशे-कल्बो-जिगर', गद्यविधा का रांगेय राघव पुरस्कार उदयपुर निवासी कहानीकार रीना मेनारिया को कृति 'बनास पार' एवं आलोचना का देवराज उपाध्याय पुरस्कार लालमादड़ी-नाथद्वारा निवासी आलोचक माधव नागदा को कृति 'समकालीन हिंदी लघुकथा और आज का यथार्थ' के नाम घोषित हुआ है।

बाल साहित्य का शंभूदयाल सक्सेना पुरस्कार जयपुर निवासी पूरन सरमा के बाल-उपन्यास 'सद्भाव का उजाला', प्रथम कृति सुमनेश जोशी पुरस्कार अजमेर निवासी गजलकार ब्रिजेश माथुर को दिया जाएगा। वहीं विविध विधा का कन्हैयालाल सहल पुरस्कार जयपुर निवासी उमा को कृति 'किस्सागोई' के लिए व देवालाल सामर पुरस्कार जयपुर निवासी नाटककार राजकुमार बुनकर इंद्रेश के नाम घोषित हुआ है।

वर्ष 2021-22 के पुरस्कार :

वर्ष 2021-22 के पुरस्कारों के तहत सर्वोच्च मीरां पुरस्कार जोधपुर निवासी डॉ. पद्मजा शर्मा की कृति 'मोबाइल, पिक और हॉस्टल तथा अन्य कहानियां' को घोषित हुआ है। गद्य विधा का रांगेय राघव पुरस्कार विकासनगर, डूंगरपुर निवासी कथाकार दिनेश पंचाल को कृति 'खेत' के लिए एवं पद्य विधा का सुधींद्र पुरस्कार धन्नासर-हनुमानगढ के जितेंद्रकुमार सोनी को काव्यकृति 'रेगमाल' के लिए मिलेगा।

दुलाराम सहारण

विविध विधाओं में दिए जाने वाला कन्हैयालाल सहल पुरस्कार सलंबूर निवासी विमला भंडारी को यात्रा-संस्मरणात्मक कृति 'अध्यात्म का वह दिन' के लिए और आलोचना क्षेत्र का देवराज उपाध्याय पुरस्कार सिरोही निवासी ओड़िसा प्रवासी दिनेशकुमार माली को कृति 'त्रेतारू एक सम्यक् मूल्यांकन' के लिए दिया जाएगा।

एकांकी-नाटक में दिए जाने वाला देवीलाल सामर पुरस्कार जयपुर निवासी प्रबोधकुमार गोविल को कृति 'बता मेरा मौतनामा' के लिए और बाल साहित्य का शंभूदयाल सक्सेना पुरस्कार रायपुर-भीलवाड़ा के बालकथाकार सत्यनारायण व्यास को कृति 'रोचक बाल कहानियां' के लिए तथा प्रथम कृति सुमनेश जोशी पुरस्कार बारां निवासी गजलकार अश्विनी त्रिपाठी को कृति 'हाशिये पर आदमी' के लिए घोषित किया गया है।

डॉ. बसंतसिंह सोलंकी

पुरस्कारों के तहत दी जाती है एक निर्धारित राशि

अकादमी के मौजूदा प्रावधानों के तहत मीरां पुरस्कार के लिए 75 हजार रुपये, सुधींद्र पुरस्कार, रांगेय राघव पुरस्कार, देवराज उपाध्याय पुरस्कार, कन्हैयालाल सहल पुरस्कार, देवीलाल सामर पुरस्कार, शंभूदयाल सक्सेना पुरस्कार प्रत्येक हेतु 31 हजार रुपये और प्रथम कृति सुमनेश जोशी पुरस्कार के लिए 21 हजार रुपये की राशि अर्पित की जाती है।

अकादमी अध्यक्ष डॉ. सहारण ने बताया कि अगस्त माह में ही भव्य समारोह आयोजित कर इन पुरस्कारों को अर्पित किया जाएगा।

प्रारंभिक बाल देखभाल के लिए सी 20 चौपाल का आयोजन

उदयपुर (ह. सं.)। सी 20 को लेकर गोगुंदा ब्लॉक स्तर पर बाल देखरेख एवं विकास को लेकर अलर्ट संस्थान के प्रशिक्षण केंद्र पर राजस्थान फोर्सेस के बैनर तले चौपाल का आयोजन किया गया। इस चौपाल में गोगुंदा क्षेत्र की 8 पंचायतों के 16 गांवों के सामुदायिक मुखिया, आशा, आंगनवाड़ी कार्यकर्ता एवं सामाजिक कार्यकर्ताओं ने भाग लेकर उनके शीघ्र समाधान पर कार्य करने की जरूरतों पर विचार विमर्श किया। मुद्दों में मुख्य थे- (1) कामकाजी एवं दैनिक मजदूरी पर जाने वाली महिलाओं के बच्चों की देखरेख के लिए समुदाय स्तर पर सुविधाएं उपलब्ध हों। (2) दूरस्थ ग्रामीण आदिवासी अंचलों में प्रसव हेतु आपातकालीन नियमित परिवहन सेवाओं की उपलब्धता हों। (3) उप स्वास्थ्य केंद्रों पर आपातकालीन प्रसव सुविधा दिन रात सुलभ हों। (4) कुपोषण निवारण हेतु उपलब्ध कराए जाने वाली खाद्य सामग्री में स्थानीय पोस्टिक खाद्यान्नों का समावेश हो। (5) आंगनवाड़ी केंद्र पूर्ण रूप से समुदाय की पहुंच में हों। इनका नियमित रखरखाव एवं उपलब्ध पोषाहार में गुणवत्ता एवं स्थानीय खाद्यान्नों का समावेश हो। (6) क्षेत्र में बालकों की संख्या के अनुसार मुख्य आंगनवाड़ी एवं मिनी आंगनवाड़ियों की अनुपलब्धता हो। (7) शाला पूर्व शिक्षा हेतु योग्य कार्मिक एवं उपयोगी सामग्री उपलब्ध हो। (8) पंचायत एवं ब्लॉक स्तरीय बाल संरक्षण समितियों के कार्य एवं भूमिका की पूर्ण जानकारी सुलभ हो।

चौपाल के प्रारंभ में अलर्ट संस्थान के बी. के. गुप्ता ने सी 20 चौपाल आयोजन के उद्देश्यों पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम में अलर्ट संस्थान के अध्यक्ष जितेंद्र कुमार मेहता एवं महान सेवा संस्थान के निदेशक राजेंद्र गामठ ने सहजकर्ता की भूमिका निभाई। संचालन सामाजिक कार्यकर्त्ता फतहलाल मेघवाल ने किया।

भौहों से चोपड़े.....

(पृष्ठ तीन का शेष)

इन लोगों में तीन मोतबीर मुखिया थे। एक आदिवासी धूला, दूसरा गर्ग जीवना तथा तीसरा बुनकर रतना था जो धूलदास, जीवनदास एवं रतनदास नाम से चर्चित हुए। उन्होंने मावजी के सान्निध्य में एक मंडली बनाई जिसके प्रति रात्रि प्रदर्शन होते रहे। ये प्रदर्शन मुख्य रूप से बेणेश्वर के कदम्ब वृक्षों से आच्छादित हरिवन में होते रहे जहाँ हरि मंदिर अवस्थित है।

थाणा के नारायणलाल साद (50) ने इस घटना की पुष्टि करते हुए बताया कि तब से साद गर्ग और बुनकर मिलकर मावजी महाराज की सादलीला का पावन प्रदर्शन बड़े ही धार्मिक अनुष्ठान के रूप में करते आ रहे हैं। सादों के लगभग 250 परिवार हैं जो डूंगरपुर कनबा थाणा साबला में बसे हुए हैं। सबसे कट्टर भक्त तो मावजी के साद ही हैं।

मावजी बड़े ही चमत्कारी लीला पुरुष थे। ऐसे कई घटना-प्रसंग उनके जीवन के साथ जुड़े हुए हैं जिनका बखान मावजी के चोपड़ों में मिलता है। मावजी ने कृष्ण-रूप में लीला रची थी। उनका पूरा जीवन ही रहस्यमय अलौकिक था। मावजी के बाद भी उनकी गादी पर जो-जो उत्तराधिकारी हुए वे भी दिव्यात्मा के रूप में ही उनके भक्तों द्वारा पूजित हुए। कुल मिलाकर साबला पीठ की गुरु-गादी की परम्परा इस प्रकार रही -

(1) मावजी महाराज सन् 1714 से 1744 ई., (2) उदियानंदजी सन् 1744 से 1773 ई. (3) जनकुंवरी सन् 1773 से 1855 ई., (4) शिवानंदजी सन् 1855 से 1872 ई. (5) पूर्णानंदजी सन् 1872 से 1888 ई., (6) कमलानंदजी सन् 1888 से 1928 ई., (7) परमानंदजी सन् 1928 से 1944 ई., (8) देवानंदजी सन् 1944 से 1989 ई., (9) अच्युतानंदजी सन् 1989 से वर्तमान।

इनमें से चार गादीपति बांसवाड़ा के, चार डूंगरपुर जिले के तथा एक उदयपुर जिले से संबंधित हैं। मावजी तथा उदियानंदजी तो डूंगरपुर जिले के साबला गांव के ही थे जबकि देवानंदजी तथा अच्युतानंदजी का संबंध डूंगरपुर के सरोदा गांव से है। जनकुंवरी उदयपुर के पियरपान की रहनेवाली थी।

यह दूसरे उत्तराधिकारी उदियानंदजी की विवाहिता थीं। इन्होंने बेणेश्वर में मुख्य कदम्ब वृक्ष के स्थान पर हरि मंदिर बनवाया। औरत का गादी संभालना समाज को असह्य लगा और विरोध बढ़ता गया तब चमत्कार यह हुआ कि अचानक उनके मूंछ उग आई। उनके इस स्वरूप को देख विरोधी सब ठंडे पड़ गये और उनके भक्त बन गये। इसलिए उन्हें जनकुंवरी के बजाय जनपुरुष ही अधिक कहा जाता है। शेष सभी गादीपति बांसवाड़ा जिले के हुए। इनमें से शिवानंदजी लीलावासा, पूर्णानंदजी रोहिड़ा, कमलानंदजी पालोदा तथा परमानंदजी नागदला नागदा गांव के निवासी थे।

अच्युतानंदजी महाराज ने बताया कि बेणेश्वर मुख्यत: धर्मस्थल है, तपस्थल है और भगवान कृष्ण का मावजी महाराज के रूप में लीलास्थल है, रास रचाने का अत्यन्त ही पवित्र पावन धवल उज्ज्वल स्थल है। यों भी संगम जहाँ भी होता है वह स्थल पवित्र होता है। जन्म को सार्थक करने, पापाचार से मुक्त होने और अपने पूर्वजों की आत्मा को सद्गति देने के लिए धर्मजीवी लोगों का यहाँ निरन्तर आना होता है।

मेले का माहात्म्य तो है ही लेकिन यों भी प्रत्येक माह की अमावस्या को यहाँ मेले जैसा माहौल रहता है। अमावस्या का दिन पितरों का, पूर्वजों का दिन माना जाता है। इस दिन पितरों की पूजा करने से उनका आशीर्वाद प्राप्त होता है। इससे वंश-यश-वृद्धि, धन-धान्य-वृद्धि तथा सभी प्रकार की मनोकामनाएँ पूरी होती हैं। इसीलिए अमावस्या को ही श्राद्ध की तिथि मुकर्रर है। कहा जाता है कि अमावस्या को श्राद्ध एवं पिंडदान करने से एक माह तक पितर तृप्त रहते हैं। जाहिर है, जो श्राद्ध नहीं करते उनके पितर अतृप्त, भूख प्यास से पीड़ित और दु:खी रहते हैं।

धर्मशास्त्रों में पितर और दिव्य पितरों का उल्लेख मिलता है। दिव्य पितर देवताओं के साथ रहते हैं जबकि पितर मनुष्यों के साथ। पितरों के सुख एवं संतोष के लिये यह जरूरी है कि सभी प्रकार के पितर-पिता, प्रपिता, पितामह, प्रपितामह, वृद्ध प्रपितामह और इसी तरह माता, प्रमाता, मातामह, प्रमातामह, वृद्ध प्रमातामह आदि का श्राद्ध करना चाहिये। श्राद्ध सदैव शुद्ध सात्विक एवं ताजे अन्न, घृत से बने पदार्थ से करना चाहिये।

बेणेश्वर को मोक्षधाम भी कहा गया है। इसी मान्यता के वशीभूत मृतक का यहीं दाहसंस्कार किया जाता है। मुख्यत: तो यह स्थल स्नान मुंडन और तर्पण के लिए ही प्रसिद्ध रहा। इन क्रियाकांडों के लिये ही यहाँ लोग विश्वास, आस्था एवं श्रद्धा के लिये एकत्र होते रहे। यहीं तब मेलमिलाप के दौरान अपने बालक-बालिकाओं के सगपण तय होते हैं और उन्हें विवाह-सूत्र में भी बांध दिया जाता है। समाज की एकता सुधार तथा संगठन की दृष्टि से भी यहाँ अलग-अलग जाति की पंचायत और जाजम जुड़ती है जिसमें कई तरह के झगड़ों का निपटारा किया जाता है। अन्य मेलों की तरह यहाँ कुंवारे-कुंवारी लुकेछिपे रूप में जीवनसाथी नहीं बनते और न कोई किसी को गुपचुप भगा ले जाता है।

मावजी की गादी पर आसीन होनेवाले सभी गुरु सुधारवादी विचारों के पक्षधर थे। यही कारण रहा कि कमलानंदजी के प्रभाव में आकर गोविंद गुरु भी अच्छे समाज सुधारक के रूप में उभरे। उनके शिष्य भी मावजी द्वारा प्रवर्तित निकलंक (निष्कलंक) सम्प्रदाय के भगत बने।

इस प्रकार हम देखते हैं कि बेणेश्वर का माहात्म्य धर्म अर्थ काम और मोक्ष का ऐसा सोपान प्रस्तुत करता है जहाँ इस भव और परभव की आत्मिक जिजीविषाएँ एकाकार हो शाश्वत जीवन का सौख्य उड़ेलती हैं।

दिगंबर मुनि की हत्या के विरोध में जैन समाज का प्रदर्शन

उदयपुर (ह. सं.)। कर्नाटक के बेलगाम में 5 जुलाई को दिगम्बर आचार्य कामकुमार नंदी महाराज की नृशंस हत्या के विरोध में सकल जैन समाज व सर्व समाज की ओर से 20 जुलाई को मौन रैली निकालकर विरोध प्रदर्शन किया गया। प्रशासन को ज्ञापन देकर दोषियों पर कठोर कार्रवाई सहित अन्य मांगें रखी गईं। रैली प्रात: 10 बजे नगर निगम प्रांगण से प्रारंभ होकर सूरजपोल, मार्शल चौराहा, मंडी, देहली गेट होते हुए कलेक्ट्रेट पहुंचकर सभा में परिवर्तित हो गई। रैली में श्रावक-श्राविकाएं हाथों में विभिन्न संदेश लिखी तख्तियां लेकर चल रहे थे।

सभा में राजकुमार फत्तावत, पारस सिंघवी, शांतिलाल वेलावत ने बताया कि कर्नाटक के बेलगांव में हत्यारों द्वारा निहत्थे अहिंसा के मार्ग पर चलने वाले जैन मुनि की निर्मम हत्या की गई है। इससे संपूर्ण समाज उद्वेलित है। अहिंसा के मार्ग पर चलने वाले जैन समाज के साथ हिंसा को बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। जैन समाज भले की संख्या में कम हो लेकिन कमजोर नहीं है।

पारस सिंघवी ने कहा कि निहत्थे प्राणी पर वार करना अत्याचार की श्रेणी में आता है। जैन मुनि किसी को भी दुख दिए बिना अपना जीवन यापन करते हैं। उन्होंने प्रधानमंत्री से मांग की कि जैन साधु-संतों को पूर्ण रूप से सुरक्षा प्रदान की जाए। प्रत्येक 20 किलोमीटर पर उनके रहने का प्रबंध किया जाए एवं यह केस फास्ट ट्रैक अदालत में दिया जाए। रैली में सम्मिलित सर्व समाज के युवाओं ने आक्रोश जताते हुए घटना को लेकर कलक्ट्रेट पर कड़ा विरोध जताया।

वे दिन कितने अच्छे थे जब उदयपुर के शिल्पग्राम में बकरा गाड़ी पर सवार हो बच्चे फूले नहीं समाते थे। - फोटो : डॉ. तुक्तक भानावत के संग्रह से

राजस्थान राज्य स्थापत्य कला बोर्ड गठन को मंजूरी

जयपुर (सुजस)। कुमावत जाति वर्ग की समस्याओं के समाधान तथा परम्परागत स्थापत्यकला को बढ़ावा देने के लिए प्रदेश में राज्य स्थापत्य कला बोर्ड का गठन किया जाएगा। मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने बोर्ड गठन के प्रस्ताव को मंजूरी दे दी। बोर्ड में अध्यक्ष, उपाध्यक्ष सहित पांच सदस्य होंगे।

बोर्ड के गठन का उद्देश्य कुमावत जाति वर्ग के लोगों के कल्याण हेतु विभिन्न योजनाएं प्रस्तावित करना, कुमावत जाति वर्ग की सामाजिक बुराइयां, कुरीतियों के विरूद्ध ठोस उपाय करने हेतु राज्य सरकार को अभिशंषा के साथ सुझाव देना, समाज के लिए संचालित कल्याणकारी योजनाओं की विभिन्न विभागों से समन्वय कर सुझाव देना तथा परम्परागत व्यवसाय के वर्तमान तौरतरीकों में बदलाव हेतु सुझाव देना रहेगा।

अपना देश-अपनी संस्कृति

पान का बीड़ा

'यूं तो आपके लिए जान हाजिर है मगर अभी तो पान हाजिर है।' धनराज टोड़ावत का नाम याद आते ही मुझे ये पंक्तियां सहज याद हो आती हैं। धनराजजी ने सात बरस की उम्र से ही अपना खानदानी पान का काम सम्भाल लिया। उन्होंने कभी पान नहीं खाया मगर हमेशा डीबी बटुआ साथ रखा और जो भी मिला उसे तबीयत से पान खिलाया।

महाराणा फतहसिंहजी और उनके उत्तराधिकारी महाराणा भूपालसिंहजी की सेवा में भी ये खूब रहे। मरजी-माफिक पान खिलाकर महाराणाओं के भी बड़े मरजीदान रहे। महाराणा फतहसिंहजी कपूरी पान के शौकीन थे जबकि भूपालसिंहजी मगई पान का शौक फरमाते थे।

महाराणा का नाम लेते ही मैंने पान के बीड़ों का जिक्र छेड़ा तो धनराजजी बोले कि महलों में पान का बीड़ा जब तक नहीं दिया जाता तब तक न तो किसी का स्वागत होता न सीख होती। दरीखाने का बीड़ा ग्यारह सीकों का होता। सीख का बीड़ा तेरह सीकों का होता। पांच या दस कोरे पान खांखरे के पत्ते में रखकर उनको बांस की सीकों से बन्द कर दिया जाता, यही बीड़ा कहलाता। उन्होंने बताया कि रनिवास का बीड़ा चौदह सीकों वाला होता। इसमें एक पान की बीड़ी बनाकर उसमें सभी मेवे रख दिये जाते। पांच दासियां इसे ले जाकर महाराणीजी को झेला देती। इसके लिए अलग से तम्बोल रवाना होता जिसके अलग हाकिम होते। एक बीड़ा गमी का होता जिसके ग्यारह सीकें होतीं। इसे महाराणा जहां बैठने जाते, ऊपर कपूर रखकर गमी वाले को देते। सरदारों, उमरावों को उनकी इज्जत के अनुसार बीड़े दिये जाते।

खैरोदा निवासी धनराजजी की छोटी उम्र में ही पिता चल बसे। इससे उनका लालन-पालन मुश्किल हो गया तब उदयपुर इनके समधी मोहनलालजी इन्हें चार रूपया माहवार रोटी, कपड़ा देने की शर्त पर अपने यहां ले आये। एकबार मोहनलालजी ने तीर्थयात्रा की तो इनकी मां को भी ले गए जिसका इतना खर्च बैठा कि धनराजजी चौदह बरस नौकरी करे तो मोहनजी का कर्ज उतारे। इस तरह की एक लिखा-पढ़ी भी करा ली।

फलस्वरूप धनराजजी ने सरवण पूत की तरह बारह बरस उनकी सेवा की फिर अपनी अलग दुकान की तो जात वालों ने इनका नूता बन्द कर इन्हें जाति से बहिष्कृत कर दिया पर उन्होंने हिम्मत नहीं हारी। अपनी होशियारी से धनराजजी महलों में नौकरी पाकर महाराणा के ऐसे विश्वासपात्र बन गये कि दूसरे लोग इनसे ईर्ष्या करने लग गये। उस जमाने के तो कई किस्से हैं जिनको याद करने से उनकी आंखें भर आईं। धनराजजी के पुत्र हीरालाल ने उदयपुर के चेटक चौराहे पर टोड़ावत ताम्बुल नाम से पान की अच्छी दुकान खोली थी जहां संध्या को साहित्यिकों की बड़ी गपशप जुड़ती। कई बार मैंने भी यहां सुई-कैंची होती राजनीतिक बहसों की गर्माहट ली है।

फूला उर्फ पोपकोन

पहले आज का पोपकोन 'फूला' नाम से जाना जाता था। आज भी मेवाड़ में यही नाम प्रचलन में है। इसके लिए आज मक्की की किस्म अलग से बाजार में मिलती है पर तब एक ही तरह की मकई थी। उससे कभी तो अच्छे फूले हुए फूले पड़ जाते पर कभी जो नहीं फूलते उन्हें गांगणे कहते। वे खाने में कठोर होते।

तब फूले माटी की केलड़ी पर तैयार किये जाते जिन्हें 'फूला पाड़ना' कहते। गर्म आंच वाली केलड़ी में केलड़ी के साइज के अनुसार मुट्ठी, चार मुट्ठी मकई डालकर कपड़े का मसूता हाथ में लिये गरम-गरम मकई को हिलाते रहते। फूले अच्छे फूले हुए सफेदजक्क पड़ जांय इसके लिए मसूता घुमाते वक्त बोलते-

फूला-फूला गाम चाल्या
धोला कपड़ा व्हैर चाल्या
पाणी में परपोटो
म्हारो फूलो मोटो।

ऐसे बोल बोलते रहते और तड़तड़ करते मकई के फूले बनते रहते। कुछ फूले इतनी उछाल देते कि चूल्हे के आसपास तथा दूर तक जा गिरते।

अब वे सब बातें हवा हो गईं। अब तो कूकर में तेल रख, तेज आंच में, गर्म तेल में हल्दी-नमक-मक्की डाल कूकर का ढक्कन पैक कर दिया जाता है और देखते-देखते फूले हुए पोपकोन खाने को तैयार हो जाते हैं। **- म. भा.**

सम्पूर्ण चेतना के कलमकार थे प्रेमचन्द

- वेद व्यास -

प्रेमचन्द की परम्परा कबीर, नानक, नामदेव, मीराबाई और दादूदयाल, रैदास और तुकाराम की सामाजिक चेतना का ही विस्तार है। प्रेमचन्द कोई भक्तिधारा और रीतिकालीन विचारों के कथाकार नहीं थे, अपितु नए समाज के निर्माण में प्रगतिशील सोच और विचार के अग्रगामी थे। जो धारा के विरुद्ध चलता है, वही इतिहास बनाता है।

साहित्यपुरुष प्रेमचन्द को मैं अपना मित्र, अपना विचार और अपना सरोकार मानता हूं। 31 जुलाई, 1880 को वाराणसी के पास लमही गांव में जन्में प्रेमचंद आज भी मुझे लगातार इसीलिए प्रासंगिक लग रहे हैं कि हमारा भारत आज भी भूखे-नंगे किसानों तथा मजदूरों, गांवों के सेठ और सामंतों तथा सांप्रदायिक भेद-विभेद और दलित-महिला उत्पीड़न की कहानियों में रात-दिन समता, न्याय और सद्भाव की तलाश कर रहा है।

प्रेमचन्द

इधर प्रेमचन्द के सृजन का प्रत्येक शब्द मुझसे आज भी यह सवाल पूछता है कि एक 'कलम के सिपाही' के रूप में तुम किसके साथ हो? आज भी भारतीय साहित्य मनीषा में सूर, कबीर और तुलसी की सभी छवियां प्रेमचन्द में दिखाई देती है।

आधुनिक भारत की वैचारिकी में रवीन्द्रनाथ टैगोर, शरतचन्द्र, सुब्रह्मम भारती और विवेकानंद की तरह प्रेमचन्द को भी घर-घर में, स्कूली पाठ्यक्रमों में तथा देश-विदेश की तीन पीढ़ियों में आकर्षण और प्रेरणा की तरह पढ़ा जाता है।

प्रेमचन्द की ही यह विशेषता है कि वह जाति-धर्म और भाषा तथा क्षेत्रीयता की सीमाएं और संकीर्णताएं लांघकर नए भारत और स्वतंत्र भारत का सपना देखा करते थे। यही कारण है कि प्रेमचन्द का साहित्य हमें आज भी एकता और मानवता का बुनियादी सरोकार समझाता है तथा कहता है कि- भारत की हजारों साल पुरानी पहचान और सामाजिक संस्कृति की आधार शक्ति इसके किसान और मजदूर हैं।

प्रेमचन्द की परम्परा कबीर, नानक, नामदेव, मीराबाई और दादूदयाल, रैदास और तुकाराम की सामाजिक चेतना का ही विस्तार है। यदि आप प्रेमचन्द का चर्चित उपन्यास 'गोदान' पढ़ेंगे, तो आप जान सकेंगे कि 21वीं शताब्दी में भी हजारों किसान आज आत्महत्या क्यों कर कर रहे हैं तथा भारत का मजदूर आज भी दुनिया का सबसे सस्ता और मेहनती मजदूर क्यों समझा जाता है?

यदि आप प्रेमचन्द का सुपरिचित लेख-'महाजनी सभ्यता' को पढ़ लेंगे, तो आपको 20वीं शताब्दी में प्रारंभ (1990) दुनिया की नई अर्थव्यवस्था का चेहरा, चाल और चरित्र समझ में आ जाएगा। आप जान सकेंगे कि निजीकरण, उदारीकरण और भू-मण्डलीकरण की, गरीबों के देश भारत में, क्या विनाशकारी भूमिका है। जिस तरह एक महाजन गांव के ठाकुर से मिलकर पूरे गांव के किसान-मजदूरों को पीढ़ी-दर-पीढ़ी कर्ज के कोल्हू में पीसता था, उसी तरह वर्तमान में विकास और बहुराष्ट्रीय कंपनियों का यह गठबंधन हमें अपने जल, जंगल और जमीन से वंचित कर रहा है। यहां एक लेखक ही आगत और विगत के बीच सामाजिक चेतना का सेतु बनाता है।

वेद व्यास

प्रेमचन्द कोई भक्तिधारा और रीतिकालीन विचारों के कथाकार नहीं थे, अपितु नए समाज के निर्माण में प्रगतिशील सोच और विचार के अग्रगामी थे।

9 अप्रेल, 1936 को लखनऊ में देश के पहले और सर्वभाषा साहित्य संगठन 'प्रगतिशील लेखक संघ' की स्थापना के उद्बोधन में प्रेमचन्द ने साहित्य, समाज और समय के बीच एक लेखक की भूमिका प्रस्तुत करते हुए कहा था कि- साहित्यकार का लक्ष्य केवल महफिल सजाना और मनोरंजन के पीछे चलने वाली सच्चाई भी नहीं, बल्कि उनके मशाल दिखाती हुई चलने वाली सच्चाई है।'

प्रेमचन्द का साहित्यिक जीवन 1901 में शुरू हुआ था और वह शिक्षा विभाग की नौकरी करते हुए भी अंग्रेजों की दमनकारी नीतियों के खिलाफ सामाजिक निराशा को अपनी लेखनी के माध्यम से व्यक्त कर जनजागरण की भूमिका निभाते थे। प्रारंभ में वह उर्दू कहानियां लिखते थे और 'सोजेवतन' कहानी संग्रह इस प्रारम्भ का आधार है। हंस, मर्यादा, माधुरी, जागरण जैसी ऐतिहासिक पत्र-पत्रिकाओं का संपादन तो आज भी हिन्दी साहित्य का प्रतिमान है। यदि आप प्रेमचंद की सैंकड़ों कहानियों-निबंधों के बीच गबन, सेवासदन, रंगभूमि, निर्मला, मंगलसूत्र जैसी कुछ बानगी ही पढ़ लें, तो आप जान सकेंगे कि भारत की खोज, का क्या महत्व है?

केवल 56 साल की उम्र में ही 8 अक्टूबर, 1936 को प्रेमचन्द का देहांत हुआ था तथा 'कलम के सिपाही' नाम से लिखी इनके पुत्र अमृतराय की पुस्तक (आत्मकथा) हमें अवश्य पढ़नी चाहिए, ताकि यह कहा जा सके कि जो धारा के विरुद्ध चलता है, वही इतिहास बनाता है।

आज प्रेमचन्द की रचनाओं का देश और दुनिया की हर भाषा में अनुवाद हो चुका है तथा भारत के गांवों और समाज को समझने के लिए उनका लेखन नई पीढ़ी के लिए एक प्रेरणा है।

उनकी अनेक कहानियों पर फिल्में भी बनी है तथा उनका साहित्य नए भारत में आज भी सामाजिक-आर्थिक न्याय के लिए जनसंघर्ष की आधारशिला है। भारतीय साहित्य में प्रेमचन्द को आज भी एक वैचारिक अभियान, आंदोलन और मुहिम का नायक समझा जाता है तथा प्रेमचन्द की संपूर्ण चेतना लोकतंत्र, समाजवाद और धर्मनिरपेक्षता की पक्षधर है।

अत: हमें आज फिर से प्रेमचन्द के सृजन सरोकारों को जानकर नए भारत के निर्माण की जन संस्कृति को मजबूत बनाना चाहिए, क्योंकि जब तक भारत में शोषण मुक्त समाज नहीं बनेगा, तब तक प्रेमचन्द हमारे मन और विचार की दुनिया में जीवित रहेंगे। ऐसे में, आज लेखक और साहित्यकार के सामाजिक और सांस्कृतिक दायित्व, प्रेमचन्द को समझे बिना, अधूरे और अपूर्ण हैं।

(लेखक वरिष्ठ साहित्यकार एवं पत्रकार हैं)

20 से 23 अगस्त तक होगा 9वां सीपीए भारत क्षेत्र सम्मेलन

सभी विधानसभाओं के अध्यक्ष, उपाध्यक्ष, सचिव और राजस्थान के सभी सांसद-विधायक करेंगे शिरकत

उदयपुर (ह. सं.)। जी-20 शेरपा सम्मेलन सहित कई अंतर्राष्ट्रीय और राष्ट्रीय आयोजनों की सफलता के बाद उदयपुर में 20 से 23 अगस्त तक 9वां सीपीए भारत क्षेत्र सम्मेलन आयोजित होने जा रहा है।

सम्मेलन में सभी राज्यों की विधानसभाओं के अध्यक्ष, उपाध्यक्ष, सचिव एवं अन्य अधिकारी भाग लेंगे। सम्मेलन की अध्यक्षता लोकसभा अध्यक्ष करेंगे। इसके अलावा लंदन स्थित सीपीए मुख्यालय से अध्यक्ष तथा महासचिव भी भाग लेंगे। सम्मेलन के उद्घाटन एवं समापन में मुख्यमंत्री की उपस्थिति प्रस्तावित है। इस दौरान राजस्थान के सभी सांसद और सभी विधायक भी कार्यक्रम में शिरकत करेंगे। सम्मेलन की सफलता के लिए प्रशासन जुट गया है और जिला कलक्टर अरविन्द पोसवाल के नेतृत्व में तैयारियां शुरू कर दी गई हैं।

9वें सीपीए भारत क्षेत्र सम्मेलन के सफल आयोजन को लेकर 28 जुलाई को राजस्थान विधानसभा के प्रमुख सचिव महावीरप्रसाद शर्मा ने जिले के चुनिंदा विभागों की बैठक ली।

बैठक में शर्मा ने सम्मेलन के दौरान विभागों से समन्वय तथा विधानसभा द्वारा संचालित कंट्रोल रूम में नोडल अधिकारी पदस्थापित करने, प्रतिनिधियों के साथ लाइजनिंग ऑफिसर लगाने, लाइजनिंग ऑफिसर्स की सूची मे मोबाइल नंबर विधानसभा को शीघ्र भेजने, कंट्रोल रूम के लिए चार आईएएस या आरएएस अधिकारियों का पदस्थापन करने, कॉन्फ्रेंस के बाद टूर के उपयुक्त स्थान का चयन करने, डिनर एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम की व्यवस्था करने, मुख्य मार्गों का सौंदर्यीकरण एवं साफ सफाई करने आदि को लेकर दिशा-निर्देश दिए।

शर्मा ने सम्मेलन की सुरक्षा, प्रतिनिधियों की सुरक्षा, पायलट वाहन, सुगम यातायात, गार्ड ऑफ ऑनर, पीठासीन अधिकारियों के लिए पीएसओ लगाने, होटल एवं अन्य स्थानों पर चिकित्सा व्यवस्था, निर्बाध विद्युत आपूर्ति, हवाई अड्डे एवं रेलवे स्टेशन पर हेल्प डेस्क की स्थापना आदि को लेकर भी चर्चा की।

कलक्टर अरविन्द पोसवाल ने प्रमुख सचिव शर्मा को विश्वास दिलाया कि उदयपुर में 9वें सीपीए भारत क्षेत्र सम्मेलन का सफल आयोजन करने के लिए प्रशासन दिन-रात मेहनत करेगा। उदयपुर में अधिकारियों की कुशल टीम है जो इस आयोजन को सफल बनाएगी।

बैठक में एसपी भुवन भूषण, स्मार्ट सिटी सीईओ अपर्णा गुप्ता, जिला परिषद सीईओ सलोनी खेमका, एडीएम (प्रशासन) ओ पी बुनकर सहित विद्युत, नगर निगम, पीडब्ल्यूडी, रेलवे, एयरपोर्ट, स्मार्ट सिटी, पुलिस, चिकित्सा, जनसम्पर्क, पर्यटन, देवस्थान आदि विभागों के अधिकारियों से तैयारियों को लेकर चर्चा की।

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक डॉ. तुक्तक भानावत द्वारा 352, कृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर - 313001 (राज.) से प्रकाशित एवं मुद्रक लोकेश कुमार आचार्य द्वारा मैसर्स पुकार प्रिंटिंग प्रेस 311-ए, चित्रकूट नगर, भुवाणा, उदयपुर (राज.) से मुद्रित। सम्पादक : रंजना भानावत। फोन : 0294-2429291, मोबाइल - 9414165391, Email : shabdranjanudr@gmail.com, drtuktakbhanawat@gmail.com, सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।